जीवन चरित्र

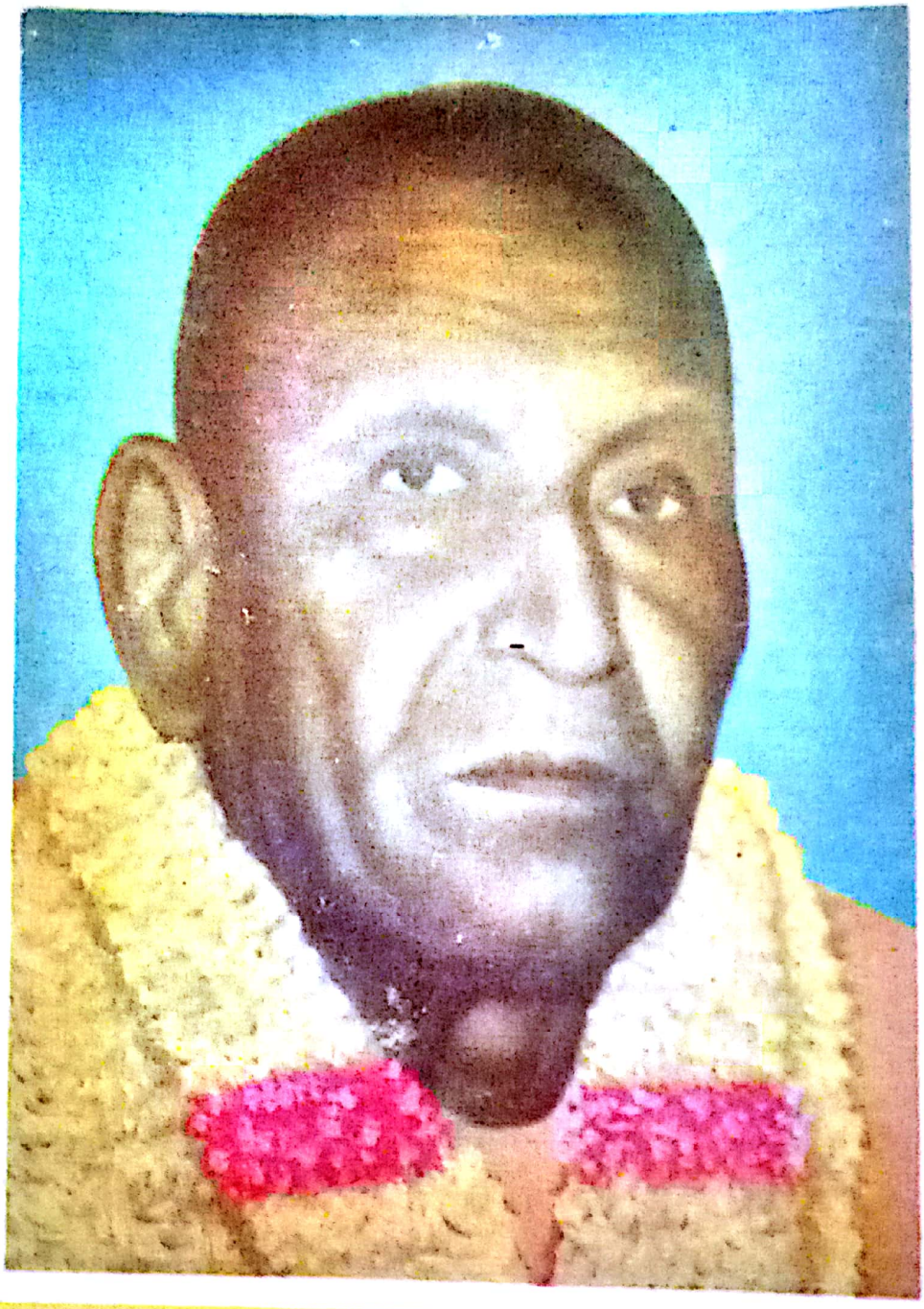

श्री श्री ब्रह्मलीन संत शिरोमणि
श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज
(बम्बई वाले)

Scanned by CamScanner

प्रस्तावना

卐 श्रीहरिः 卐
श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य अनन्त श्री
स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज
गोवर्द्धनमठ, शङ्कराचार्य मार्ग, पुरी - 752 001. (उड़ीसा)
H. H. Jagadguru Shankaracharya Shri Swami Nishchalanand Saraswati
Govardhan Math, Shankaracharya Marg, P. O. PURI-752001. (Orissa)

240e8

पत्राङ्क............ शिविर स्थल वृन्दावन दिनाङ्क 25.10.96

श्रीभगवन्नामसंकीर्तनके अमोघप्रभावसे स्वयंको और सबको प्रमुदित करनेवाले सन्त थे श्रीस्वामी कृष्णानन्द जी महाराज। जीवनमें नामापराधोंसे बचते हुए भगवन्नामसंकीर्तनका अनुपम महत्त्व है। 'वस्तुशक्ति ज्ञानकी अपेक्षा नहीं रखती' - इस नियमके अनुसार कदाचित् कोई भगवन्नामोंके अर्थको विधिवत् न भी समझे तो भी भगवन्नामोंको गुन-गुनाते रहना चाहिये। अनात्मवस्तुओंमें प्रीति और प्रवृत्तिको शनैः-शनैः संकुचित करते हुए भगवन्नामके आलम्बनसे भगवद्रूपमें चित्तको समाविष्ट कर देना चाहिये। भगवदनुग्रहसे संप्राप्त बोधके अमोघ प्रभावसे स्वयंको भवबन्धनसे विमुक्त कर लेना चाहिये। सदाचार

(१)

Scanned by CamScanner

संयम, स्वधर्मपालन, भगवत्-शरणागति और भगवत्तत्त्वविज्ञानके अमोघ प्रभावसे जीवका सुनिश्चित कल्याण होता है।

बम्बईवाले श्रीस्वामीजी महाराजके शिष्य और भक्तवृन्द उनका जीवनवृत्त प्रकाशित कर रहे हैं, यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई। जीवनवृत्तके सनातन शास्त्रसम्मत तथ्योंको हृदयंगम कर पाठकवृन्द प्रमुदित हों, ऐसी भावना है।

निश्चलानन्द सरस्वती

अनन्त श्री विभूषित

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

(बम्बई वाले)

Scanned by CamScanner

श्री गुप्तेश्वर नाथ जी
चारुआ में चतुर्मास

सहपुरा भिटौनी के यज्ञ के पश्चात श्री स्वामी जी महाराज इटारसी, होशंगाबाद, हरदा होते हुए श्री नर्मदा जी के तट पर स्थित पवित्र भूमि हँडिया पहुँच गये। यहाँ नदी के किनारे-किनारे भगवान के मन्दिरों की छटा भी अद्भुत है। पास में ही घोर वनों की सघनता महात्माओं की इस तपोस्थली की शोभा को एक ऐसा रूप प्रदान करती है जो मन को अनायास ही आकर्षित कर लेती है। फल-फूल से पूरित एक सुन्दर मन्दिर में श्री महाराज जी के प्रवेश करते ही श्री हरे राम बाबा इनका दर्शन पाकर आत्म विभोर हो गये। बड़े उत्साह एवं आदर से ठहरने के लिये आग्रह किया। पास के ग्रामों में जाकर भगवत-प्रेमी भक्तों को श्री महाराज जी के पधारने की जानकारी दी। यह सुनकर बहुत से लोग मन्दिर पहुँच गये। हर प्रकार की सेवा कर अपने भाग्य को सराहने लगे। सभी का मन आनन्द से गद्-गद् हो गया।

Scanned by CamScanner

यहां के कुछ प्रेमी सज्जनों से स्वामी हीरापुरी जी महाराज के गुप्तेश्वर नाथ महादेव जी (चारुआ) का परिचय मिलते ही चरित्र नायक के मन में अपार उत्साह उमड़ पड़ा। श्री गुप्तेश्वर नाथ जी के प्रति अपार श्रद्धा लिये दूसरे दिन प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचने पर सभी मन्त्र मुग्ध हो गये।

यह प्रसिद्ध मन्दिर प्रकृति की गोद में स्थित है। हरी-हरी फूलों से लदी झाड़याँ, कल-कल गान करती पर्वतीय नदी के स्वच्छ जल में विहार करती मछलियों का दृश्य हर किसी के मन को अपूर्व आनन्द देता है। महादेव जी की विशाल मूर्ति पृथ्वी के गर्भ में स्थित है जहां प्रातः-सायं काल भक्तों की अपार भीड़ होती है।

जब चारुआ के भक्तों को श्री स्वामी जी महाराज के पदार्पण की सूचना मिली तो प्रेम विभोर हो अपना काम-काज छोड़ दर्शनार्थ दौड़ पड़े। श्री स्वामी हीरा-पुरी जी महाराज ने इन्हें हृदय से लगा बड़े आदर एवं सम्मान से ठहराया। वहाँ के सभी भक्तगण तन-मन-धन से सेवा में लग गये। अन्न-धन का भण्डार लगा दिये। इनका ऐसा प्रेम और उत्साह देख श्री महाराज जी चातुर्मास यहीं पर व्यतीत किये।

Scanned by CamScanner

संन्यास आश्रम घाट कोपर में पन्द्रह दिन का अखण्ड संकीर्तन समारोह

राजा बाड़ी घाट कोपर बम्बई में श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज का सन्यास आश्रम बनकर तैयार हो जाने का समाचार पत्र द्वारा चारुवा में चातुर्मास करते समय ही मिल जाने से श्री महाराज जी को बड़ी प्रसन्नता हुई। इन दोनों महापुरुषों में परस्पर इतना स्नेह और प्यार रहा कि शरीर से दो होते हुए भी हृदय की एकता सदैव बनी रही।

श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज का प्रेम से परिपूरित निमन्त्रण-पत्र प्राप्त होते ही श्री महाराज जी चारुवा से खण्डवा होकर सीधे घाट कोपर पधारे। यहाँ बड़े आदर एवं उत्साह से श्री महाराज जी की सुख सुविधा को ध्यान में रखते हुए आश्रम में ठहराने की समुचित व्यवस्था पहले से ही हो चुकी थी। कथा, प्रवचन, भजन का कार्यक्रम तो चल ही रहा था; १५

Scanned by CamScanner

दिन के अखण्ड श्री भगवन्नाम का शुभारम्भ होते ही आश्रम की शोभा में चार चाँद लग गये। बड़ा ही पवित्र एवं निर्मल वातावरण बन जाने से सभी भक्तगणों के हृदय में शान्ति एवं प्रेम की अनुभूति होने लगी।

इस समारोह में सुश्री बहन शान्ता देवी, सुश्री बहन लीलावती पोद्दार सेठ जी श्री बनारसी लाल झुनझुन वाले आदि ने महान सहयोग देकर इस महोत्सव को सफल बनाया ही एवं उत्तर प्रदेश से यहाँ आये अनेक प्रेमियों ने अपने आराध्य देव की तन, मन धन से सेवा कर भगवद् भक्तों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत कर दिया। पूरे कार्तिक माह यह समारोह चला तथा आश्रम में अपूर्व आनन्द छा गया।

इस समारोह की पूर्णाहुति के पश्चात सेठ जी श्री महावीर प्रसाद रूँगटा के आग्रह पर श्री महाराज जी रूँगटा हाउस निपिन्सी रोड चले आये। रूँगटा परिवार की सेवाओं की सहारना समय-समय पर श्री महाराज जी किया करते थे। यह विशाल भवन पहाड़ी पर स्थित है जहाँ से समुद्र का सुहावना दृश्य बराबर दिखाई देता रहता है। यहाँ २१ दिन तक कथा, कीर्तन चला; आनन्द का भण्डार लुटता रहा।

Scanned by CamScanner

श्री श्री माँ आनन्दमयी का संयम सप्ताह महोत्सव

श्री श्री आनन्दमयी माँ के संयम सप्ताह के बिड़ला जी की जन्म भूमि पिलानी (राजस्थान) में आयोजन होने की सूचना बम्बई में ही मिल गई थी। इस समारोह के आमन्त्रण को स्वीकार कर महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेश्वरानन्द जी महाराज, त्यागमूर्ति श्री स्वामी गणेशानन्द जी महाराज विद्यावारिधि श्री स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज के साथ श्री महाराज जी पिलानी पधारे। आठ-नौ दिन तक संयम सप्ताह समारोह में सम्मलित रहे। श्री श्री माँ का यह समारोह प्रति वर्ष विभिन्न स्थानों पर मनाया जाता है। विशेष सजावट एवं पंडाल में कथा, कीर्तन, प्रवचन के कार्यक्रम चलने से एक अलौकिक दुनियाँ में रह कर सभी श्रोतावर्ग पर बड़ा ही चमत्कारिक प्रभाव पड़ता और सभी प्रेमी जनों के हृदयगुहा में अलौकिक आनन्द भर जाता।

Scanned by CamScanner

श्री जगद्गुरु शंकराचार्य आश्रम ब्रह्मनिवास में महोत्सव

पिलानी के महोत्सव के समाप्त होने पर श्री महाराज जी दिल्ली, मथुरा, आगरा ठहरते हुए तीर्थ-राज प्रयाग पहुँच कर अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी शान्तानन्द जी महाराज के अलोपी बाग स्थित 'ब्रह्मनिवास' आश्रम में पधारे। दोनों महान विभूतियों के परस्पर प्यार, स्नेह ने सभी को आनन्द विभोर कर दिया। श्री जगद्गुरु जी महाराज ने बड़े आदर से श्री स्वामी जी को बहुत सुन्दर स्थान पर ठहराया। श्री गंगा-यमुना की इस पवित्र भूमि पर बने हुए आश्रम की छटा बड़ी निराली थी।

श्री शंकराचार्य जी महाराज की आज्ञा से एक बड़ा समारोह आयोजित किया गया। इस आश्रम में परम भगवत् भक्त श्री विश्वम्भर नाथ जी भार्गव 'स्टैडर्ड प्रेस वाले' जिनके सुपुत्र श्री राधेश्वर नाथ जी भार्गव श्री स्वामी जी से मिले। यह परिवार आश्रम के लिए अपनी सेवाओं की हद कर देते थे।

Scanned by CamScanner

सम्पूर्ण परिवार ही भगवान की भक्ति में लीन रहता। अतः श्री स्वामी जी को इनसे मिलकर अपार हर्ष हुआ। इस परिवार में कथा, कीर्तन होता रहता, जिसमें श्री स्वामी जी को समय-समय पर आमन्त्रित करते रहते।

Scanned by CamScanner

गजराज भवन (विक्रमपुर कोठी) में श्री स्वामी जी महाराज का पदार्पण

श्री शिव प्रताप जी मिश्र एवं राजमाता गजराज कुंवरि के विशेष आग्रह से श्री महाराज जी (बम्बई वाले गजराज भवन, स्टेनली रोड, इलाहाबाद में पधारे। राजमाता ने हृदय से स्वागत किया एवं इस विशाल भवन में ठहरने आदि की समुचित व्यवस्था कर दी। सर्व प्रथम श्री महाराज जी की अध्यक्षता में श्रीमद् भागवत की कथा एवं अखण्ड संकीर्तन का बड़ा ही सुन्दर आयोजन किया गया।

पुत्री गीता कुमारी एम. ए., गायत्री कुमारी, लाल भगतसिंह एडवोकेट, लाल भीमसिंह, श्री शहजादा साहब सभी लोगों ने बहुत श्रद्धा से श्री महाराज जी की सेवा की। आस-पास के विद्वतवर्ग एवं उच्चपदाधिकारी अनेकों भक्तगण जो आपके दर्शनार्थ आये सभी श्री चरणों में शीश नवाकर अपने-अपने भाग्य की सराहना करते। इनमें श्री ग्रीशचन्द्र (सदस्य लोकसेवा आयोग) एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती चन्द्रमुखी देवी के ऊपर श्री महाराज जी की अपार कृपा बनी रही।

Scanned by CamScanner

श्री शिव प्रताप जी मिश्र एम.ए. महाराज श्री की आज्ञानुसार बड़ी-बड़ी सभाओं में श्री रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ आदि महापुरुषों के सद्उपदेशों का अंग्रेजी में बड़ा सुन्दर भाषण करते। श्री मिश्र (बब्बन) को श्री महाराज जी का बड़ा प्यार मिला और सदा ही महान कृपा बनी रही। इन्होंने स्वर्गीय पं० जवाहर लाल नेहरू जी की पुत्री प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित (संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा की प्रथम भारतीय अध्यक्ष) आनन्द-भवन के श्री जगपति दुबे, श्री प्रभाकर जी, श्री आनन्द जी, स्वामी सन्त जी महाराज सभी का परिचय कराया। श्री महाराज जी का इन सभी महानभावों से बहुत बड़ा स्नेह बना रहा।

श्री महाराज जी अपने विभिन्न भ्रमण कार्यक्रमों एवं दूर तथा निकटवर्ती आयोजनों में आते-जाते कुछ समय निकालकर गजराज-भवन में २-४ दिन अथवा सप्ताह भर ठहर कर आगे प्रस्थान करते। इस प्रकार राजमाता जी के मन में श्री महाराज जी के साथ भ्रमण पर जाने की इच्छा प्रबल होती गई। आगे चलकर श्री महाराज जी के सानिध्य में आयोजित अखण्ड श्री

Scanned by CamScanner

भगवन्नाम संकीर्तन समारोहों में बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, वाराणसी, आगरा, बाराबंकी आदि अनेक स्थानों में सम्मिलित होने का सुअवसर निरन्तर इन्हें प्राप्त होता रहा।

गजराज-भवन में भी श्री महाराज जी के तत्वावधान में कई बार महोत्सवों के आयोजन हुए। इसी प्रकार विशेष अवसरों पर राजमाता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के अनुरोध पर ग्राम विक्रमपुर जिला प्रतापगढ़ में भी कई बार श्री महाराज जी पधारने की कृपा किये।

श्री ग्रीशचन्द्र जी को जीवन-दान :-

गजराज भवन के निकट रह रहे श्री ग्रीशचन्द्र जी को पक्षाघात (लकवा) हो जाने के कारण सिविल अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। उनकी धर्मपत्नी प्रतिदिन अस्पताल जाते समय श्री महाराज जी को प्रणाम करने आतीं। एक दिन श्री महाराज जी ने उन्हें अस्पताल जाकर देखने के लिए कहा। वहाँ जाने पर बड़े-बड़े डाक्टर, जो उनका उपचार कर रहे थे, सूचित किये कि रोगी से मिलने और कमरे में जाने की मनाही है। धर्म-पत्नी चन्द्रमुखी देवी के अनुरोध पर श्री महाराज जी एक मिनट के लिए ही कमरे के अन्दर गये। बाहर आते ही

Scanned by CamScanner

श्री महाराज जी ने बताया कि आप लोग घबराएँ नहीं। बाबू जी को स्वास्थ लाभ होकर पुनः अपना कार्य भार सम्हालने का अवसर भगवान प्रदान करेंगे। सन्तों की वाणी श्री महाराज जी में अटूट श्रद्धा एवं विश्वास के फलस्वरूप पारिवारिक सदस्यों की प्रसन्नता एवं हर्ष का ठिकाना न रहा जब सभी ने आकर श्री चरणों में प्रणाम कर सूचित किया कि स्वास्थ लाभ के उपरान्त घर आकर बाबू जी ने कार्यालय जाना प्रारम्भ कर दिया है।

Scanned by CamScanner

राम का नाम

अये राम तेरे नाम का मुझको अधार है,
अन्धे को जैसे लाकड़ी तन का सहार है।
जप योग यज्ञ साधन कुछ बन पड़े नहीं,
कलियुग में तेरे नाम की महिमा अपार है।
अये राम.....

लिखने से राम नाम के जल में शिला तरी,
कैसे न मनुष जा सके भव सिंधु पार है।
अये राम.....

सबरी के पाद नीर से सरवर विमल हुआ,
छूने से चरणों के तरी गौतम की नारि है।
अये राम.....

करके भरोसा मन में तुम राम नाम सुमिरो,
ब्रह्मानन्द छूटे जनम मरण ये बार-बार है।
अये राम.....

Scanned by CamScanner

इस परम पवित्र जीवन चरित्र को पाठकों ने अत्यन्त रुचि से पढ़कर अपने उद्धार हेतु कुछ न कुछ प्रेरणा अवश्य प्राप्त की होगी। अतः अब महाराज श्री के शिष्यों, भक्तों, सेवकों का जीवन परिचय यहाँ करा देना उपयुक्त होगा। थोड़े समय में ही जिन लोगों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हुई है उसका उल्लेख आगे के पृष्ठों में किया जायेगा। आशा है पाठकगण इससे लाभान्वित होकर नये उत्साह से अपने जीवन को सफल बनाने के लिये प्रोत्साहित होंगे।

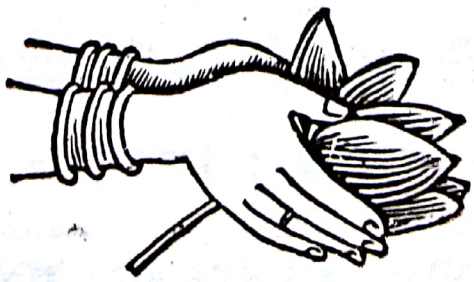

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज

[श्री प्रेमानन्द जी से पाठकगण पहले से ही परिचित हैं।]*

जिला मैनपुरी तहसील शिकोहाबाद ग्राम बहोरनपुर निवासी श्री लाल बहादुर तिवारी के सम्पन्न जिमीदार परिवार में सन् १९०९ ई० में बालक ने जन्म लिया; जिसका नाम बदनसिंह रक्खा गया। चार वर्ष की अवस्था में ही माता का देहान्त हो जाने के कारण इनकी चाची कोकिला देवी ने इनका तथा छोटे भाई राजाराम का पालन-पोषण किया। इनके चाचा श्री रामसिंह के दो पुत्र राधेश्याम एवं सियाराम हुये। चारों भाई साथ-साथ पाठशाला में पढ़ने जाते। सन् १९२४ में कक्षा ४ तक पढ़ाई कर लेने के बाद घर पर कामकाज देखने लगे। ग्राम बेंदी तहसील फिरोजाबाद निवासी पंडित शोभाराम बजाज की सुपुत्री रामश्री के साथ बदनसिंह का विवाह सम्पन्न हुआ।

श्री बदनसिंह एक स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे। जिनके हृदय में देश-भक्ति एवं देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी थी। एकबार आपने नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की सभा में भाग लिया। भाषण के अन्त में नेता

---

* देखिये जीवन चरित्र (प्रथम खण्ड) पृष्ठ संख्या ६६-६७

Scanned by CamScanner

जी ने पूँछा कि देश सेवा के लिए कौन अपने आपको समर्पित करने के लिए तैयार है, तो बहुत कम लोगों ने अपनी सहमति प्रकट की जिनमें श्री बदनसिंह भी थे।

इस प्रकार १९३२ में आप देश की स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गये। रेलवे स्टेशन हिरनगाँव से अलीगढ़ तक इस वीर सैनानी की कार्य स्थली बरहन क्षेत्र कहलाती थी। आन्दोलनकारियों के साथ रेल की पटरी उखाड़ने, तार काटने, डाकखाने जलाने आदि आपराधों में ब्रिटिश सरकार की खिलाफत में इन्हें नौ बार जेल जाना पड़ा। सन् १९४३ में बंगाल के एक क्रान्तिकारी युवक को घायल अवस्था में अपने साथी साधोसिंह पुत्र ठा० फतेहसिंह निवासी करकोली तहसील फोरोजाबाद के सहयोग से लगभग डेढ़ माह में नदी के किनारे-किनारे गुप्त रूप से पैदल-पैदल अलीगढ़ तक पीठ पर उठाकर पहुँचाने का साहसिक कार्य पूर्ण किया। पुलिस इनकी गिरफ्तारी के लिये सदा परेशान रहती, परन्तु इन्होंने कभी हार नहीं मानी और बराबर टक्कर लेते रहे।

सन् १९४४ में इनके एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम गोवर्धन रखा गया। एक वर्ष बाद पुत्री शीतला देवी का जन्म हुआ।

Scanned by CamScanner

स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय पूज्य श्री स्वामी जी महाराज संकीर्तन समारोह में ग्राम बैंदी पधारे इसकी सूचना मिलते ही बदनसिंह भी फरारी हालत में अपनी ससुराल आ पहुँचे। पहले से कोई परिचय न होने के कारण बदनसिंह मुख्य सभा स्थल से हटकर लकड़ी की सोटों पर बैठ गये जो गाँव के एक मकान की छत पाटने हेतु रक्खी थीं। इनके बैठने से कुछ सोटें अपने स्थान से खिसक गईं। आवाज सुनते ही बेटी रामश्री की कुछ सहेलियाँ, जो श्री महाराज जी के सम्मुख बैठी हुई थीं, ने हँसी-हँसी में कहा 'हमारी सोटों को न उठा ले जाना।" सभी को हँसता देख श्री महाराज जी ने इस हँसी का रहस्य जानने के लिए इच्छा व्यक्त की। एक सहेली ने रामश्री की ओर संकेत कर बता दिया कि ये इनके पति हैं जो यहां आने में संकोच कर रहे हैं। श्री महाराज जी ने बदनसिंह को तुरन्त बुलवा लिया और बड़े स्नेह से आदर सहित अपने सामने ही बिठा लिया। एक वीर सेनानी को देख श्री स्वामी जी का मन आकर्षित हो गया, क्योंकि देश की स्वतन्त्रता के प्रति बहुत ही उत्कट अभिलाषा आपके मन में रहती थी।

Scanned by CamScanner

पूज्य श्री महाराज जी का दर्शन कर बदनसिंह पानी-पानी हो गये; प्रेम-विभोर हो स्वयं को श्री चरणों में मन ही मन अर्पित कर दिये। सकल संचित पुण्य जाग्रत हो गये। पं० शोभाराम जी के घर में श्री स्वामी जी महाराज के काषाय वस्त्र टंगे हुए थे, जिनको पहन कर श्री चरणों में नतमस्तक हो उनके सम्मुख खड़े हो गये। इनके अगाध प्रेम एवं समर्पण को देख पूज्य श्री महाराज जी ने इनका नाम स्वामी प्रेमानन्द रख दिया। इस प्रकार इन्हें श्री स्वामी जी महाराज का प्रथम एवं ज्येष्ठतम शिष्य होने का महान गौरव प्राप्त हुआ। श्री महाराज जी की सेवा में रहकर अनेक स्थानों पर संकीर्तन का प्रचार किया।

श्री स्वामी प्रेमानन्द जी अपने शिष्य डा० शिवराम शर्मा प्रवक्ता श्री शिवप्रसाद राष्ट्रीय इन्टर कालेज के पास सन् १९६१ से जाया करते थे। धीरे-धीरे अछनेरा में आपके अनेक शिष्य बन गये। सन् १९७९ के क्वार मास में अछनेरा पधारे। पूज्य गुरुदेव बम्बई वाले महाराज जी के अछनेरा आगमन की सूचना थी, परन्तु महाराज श्री का कार्यक्रम इलाहाबाद के निकट गंगा तट पर श्री दूधाधारी महाराज के आश्रम (ग्राम

Scanned by CamScanner

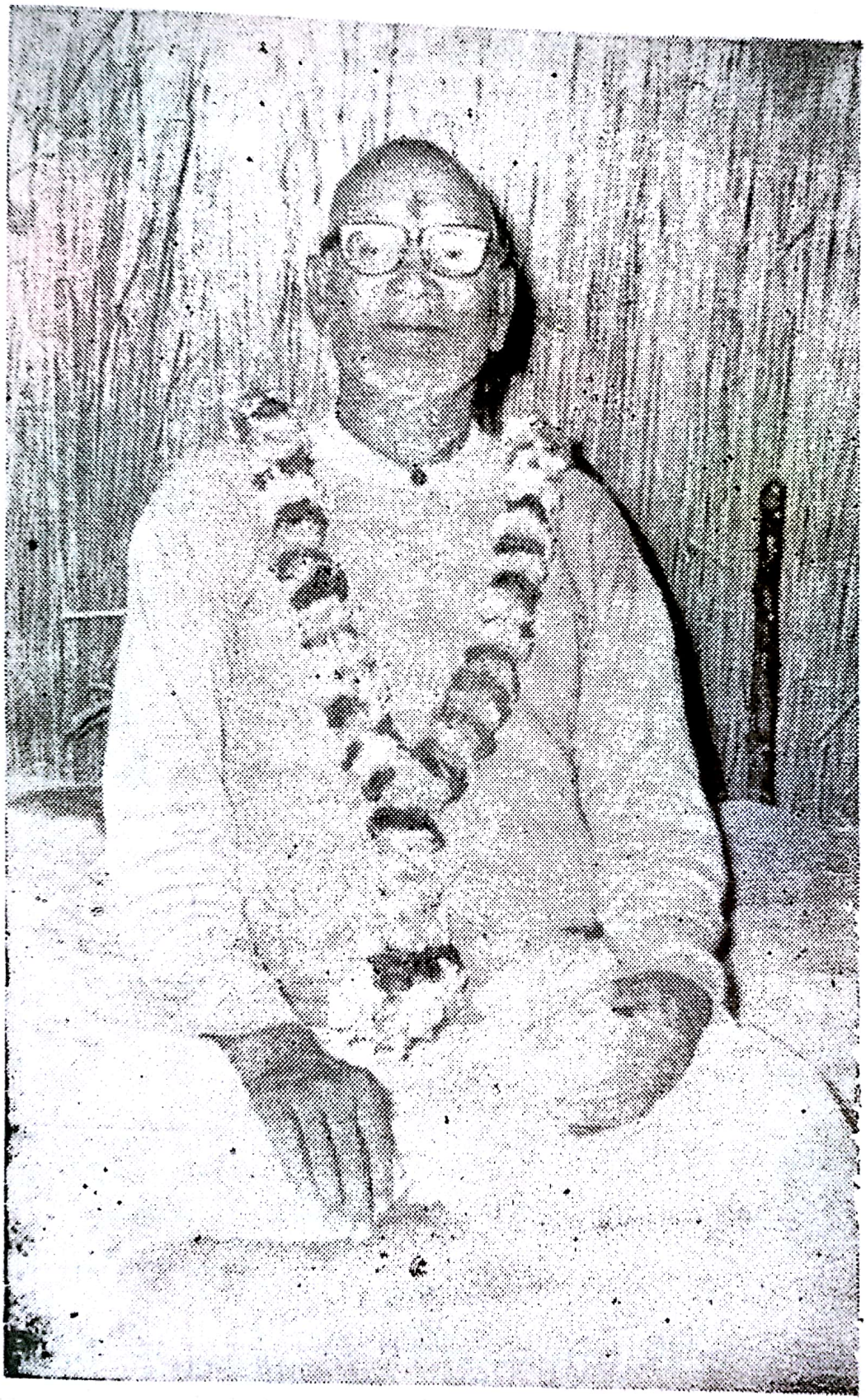

श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज

Scanned by CamScanner

मुरहूँ) जाने का निश्चय हो जाने से अछनेरा की यात्रा नहीं बन सकी। यह जानकारी प्राप्त होते ही स्वामी प्रेमानन्द जी ने कहा, "अब वे नहीं आ रहे हैं तो हम भी चले!" इस प्रकार रहस्यमय वाणी में संसार छोड़ने का संकेत कर दिये।

दूसरे दिन पितृ अमावस्या प्रातः आठ बजे से प्रारम्भ होकर अगले दिन आठ बजे तक थी। डा० शिवराम शर्मा के घर पर ही प्रातः कथा, प्रवचन सत्संग करते रहे। उनके कार्यवश बाजार चले जाने पर श्री स्वामी जी तख्त पर तीन बार प्राणायम कर ब्रह्मलीन हो गये। डा० शर्मा के वापस आने पर कमरे में प्रवेश कर देखने पर उन्हें पता चला कि स्वामी जी ब्रह्मलीन हो गये। यह समाचार वन को आग को तरह फैलते ही एक विशाल जन समूह उमड़ पड़ा। सायं विमान सजाकर शोभा-यात्रा निकाली गई। जिसके दर्शन कर अपार जनता जनार्दन ने पुण्य लाभ लिया। आपके पार्थिव शरीर को एक मेटाडोर गाड़ी द्वारा राजघाट श्री गंगा जी के तट पर ले जाकर प्रातः चार बजे पितृ अमावस्या पर्व में जल समाधि दी गई।

प्रातः स्मरणीय श्री महाराज जी (बम्बई वाले)

Scanned by CamScanner

को तार-पत्र द्वारा इलाहाबाद के पते पर स्वामी प्रेमानन्द जी के सम्बन्ध में सूचित कर दिया था। सूचना प्राप्त होते ही महाराज श्री ने अछनेरा जाने का निश्चय कर लिया। इस आशय से एक नोटिस छपवाया गया, जिसमें श्री स्वामी प्रेमानन्द जी के गोलोक धाम सिधारने एवं अछनेरा के लिए प्रस्थान करने की सूचना डाक द्वारा सभी स्थानों को भेजी गई। गुरु देव के अछनेरा पदार्पण पर श्री स्वामी जी की शोडशी का आयोजन किया गया। इसके उपलक्ष में २४ घन्टे का अखण्ड संकीर्तन एवं भण्डारा हुआ।

आश्चर्यजनक एवं रहस्यमय घटनाएँ–

(१) श्री स्वामी प्रेमानन्द जी के ब्रह्मलीन होने से पूर्व अछनेरा में रामायण पाठ कीर्तन आदि नहीं होता था। एक दिन डा० शिवराम ने प्रश्न किया कि यहाँ इस प्रकार का कोई आयोजन नहीं करता है। आपने समझाया कि समय आने पर सब होगा। आपके भण्डारे के बाद अछनेरा में एक महात्मा आए और छः माह तक अखण्ड रामचरित मानस पाठ चलाया। सम्पूर्ण उपनगर 'सियारामा' मय हो गया; यहां तक कि मुसलमान भाई भी 'सियारामा' बोलने लगे। सुबह हरिसंकीर्तन सहित प्रभात फेरी

Scanned by CamScanner

वर्षों तक चली। अब आपकी पुण्य स्मृति में डा० शिवराम शर्मा के निवास स्थान पर प्रति वर्ष अखण्ड संकीर्तन एवं भण्डारा का आयोजन किया जाता है। हर अमावस्या को हरिकीर्तन होता है।

(२) फागुन माह में एक बार स्वामी प्रेमानन्द जी शिकोहाबाद आये। पं० सियाराम के घर पर माता जी से मिले और बताया कि इस साल कनागतों में मैं चला जाऊँगा। माता जी ने कहा कि मेरे सामने ऐसा कह रहे हो। मैं बैठी रहूँगी और तुम चले जाओगे। स्वामी जी हँस कर बोले "जब तेरा वक्त आयेगा तब तू जायेगी, जब मेरा वक्त है तो मैं जा रहा हूँ।"

(३) अछनेरा में डा० शिवराम को श्री स्वामी प्रेमानन्द जी ने बताया कि मेरे शरीर छोड़ जाने पर पं० सियाराम को शिकोहाबाद जाकर पशुओं की दवाइयों की दूकान पर सूचित कर देना। कनागत के बाद दोपहर मोटर साइकिल दूकान पर खड़ी करके डा० शिवराम ने पूँछा, "आपके कोई भाई महात्मा थे।" पं० सियाराम ने कहा, "महात्मा थे नहीं हैं।" डा० शिवराम ने बताया, "अमावस्या

Scanned by CamScanner

को लगभग ९ बजे सुबह उन्होंने अछनेरा मेरे घर पर शरीर त्याग दिया।"

प० सियाराम ने सहज रूप से कहा, "तेरह को वे दूकान पर आये और पूँछा, "चाची घर पर है ?" पं० सियाराम ने उठ कर चरण स्पर्श कर बताया, "चाची कल घर चली गई।"

एक लड़का दूकान से चाय बनवाकर ले आया। उन्हें चाय पिलाई। फिर स्वामी जी बोले, "अब जा रहा हूँ।" इस पर पं० सियाराम ने कहा, "घर पर चलिये; मैं दूकान बन्द करके आ रहा हूँ।" जब घर पर (१/२ घण्टे में) पहुँचा तो पता चला कि घर पर वे नहीं आये।"

यह सब सुनकर मास्टर साहब (शिवराम जी) ने कहा, "वे तो अछनेरा से कहीं गये ही नहीं। यह एक चमत्कार ही हुआ। वे सूक्ष्म शरीर से आकर मिले, चाय पिये, फिर पता नहीं चला।"

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज
(सहसपुर वाले)

श्री बिहारी लाल, निवासी ग्राम अब्बासपुर, तहसील शिकोहाबाद जिला मैनपुरी के चार पुत्र हुए। राम दयाल, वृन्दावन, मवासी लाल एवं श्रीपाल। सभी का जन्म इसी ग्राम में हुआ। सबसे छोटे श्रीपाल का जन्म सम्बत् १९७३ में हुआ। जन्म के चार वर्ष बाद ताऊन के प्रकोप में इनकी मां का देहान्त हो गया। अतः इनका लालन-पालन इनकी बुआ रामप्यारी के द्वारा हुआ।

सेंगरी ग्राम के पं० सालिगराम ने इस ग्राम में प्राइमरी पाठशाला की स्थापना की थी। पं० विद्याधर साढ़ू पुर वाले अध्यापक के समय में इसी शाठशाला में बालक श्रीपाल ने कक्षा चार तक शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में ही होनहार बालक अध्ययन के बाद सायंकाल पिताजी के लिए रात्रि का भोजन लेकर यमुना नदी के बीहड़ के किनारे डाड़े वाले खेत पर चले जाते। वहीं शान्तमय वातावरण में रात्रि विश्राम कर प्रातः गाँव में चले आते।

Scanned by CamScanner

एक दिन मढ़ा में लेटे हुए इनके कानों में आवाज सुनाई दी; "श्रीपाल अभी सोते ही रहोगे।" बाहर निकल कर देखा, परन्तु कोई दिखाई नहीं पड़ा। मढ़ा (झोंपड़ी) में अन्दर जाने पर पुनः वही शब्द कानों में स्पष्ट सुनाई दिये। पुनः बाहर आने पर कोई भी दिखाई नहीं दिया। मन में विचार किया कि यह आवाज आई तो कहाँ से आई ? फिर सोचा हो न हो यह मेरे लिये अवश्य ही कोई आकाश वाणी हुई है। मन ही मन निश्चय किया, "अब सोते नहीं रहेंगे।" और तभी से भगवान का भजन-ध्यान प्रारम्भ कर प्रभु के समर्पित हो गये।

इसी मढ़ा में रात्रि के समय रामायण का पाठ कर अपने पूज्य पिता जी को सुनाना प्रारम्भ कर दिया। पढ़ाई से समय मिलने पर भाइयों के साथ दिन में कुछ कमाई कर लेते। इसी पैसे की सामिग्री आदि मँगा कर कभी-कभी मढ़ा पर ही हवन का आयोजन भी करने लग गये।

छोटे पन से ही पं० गोविन्द प्रसाद, पं० केदार नाथ, चौ० हुकुमसिंह, चौ० महेन्द्रसिंह, जगजीत सिंह, जौहरी सिंह, नन्दराम सिंह, गंगासिंह, कुँवर सेन जैन,

Scanned by CamScanner

चौ० गोदाम सिंह, नवाब सिंह, सिलेटी सिंह राजा आदि ग्राम के सभी छोटे-बड़ों का अपार हार्दिक प्रेम मिला।

'जापे कृपा राम की होई ।
तापे कृपा करे सब कोई ।।

यह कहावत चरितार्थ हो उठी।

आज कल भी समस्त ग्राम वासियों का ही नहीं, अपितु अड़ोस-पड़ोस के एवं दूर-दूर तक के सभी लोगों का अपार प्रेम, आदर सम्मान निरन्तर हृदय से मिल रहा है।

पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात राम सरूप के डाँड़े वाले खेत में ६० दिन की मौन साधना की। इस अवधि में आधा सेर दूध अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण नहीं करते थे। यदि बाद में कोई दूध ले जाने का प्रयत्न करता तो एक नाग देवता फन फैलाये दिखाई पड़ते और उन्हें वापस लौट जाने का संकेत मिल जाता। फूँस की मढ़य्या में मौन तोड़ते समय बहुत धीमे स्वर में पं० रामानन्द के आने पर बात-चीत की एवं मन-मन में ही ईश्वर वन्दना की। सारा गाँव वहाँ झण्डूसिंह, उलफत सिंह, बंशीलाल, बंशीधर मुखिया

Scanned by CamScanner

एकत्र हो गया और डोली में बिठा कर ग्राम में ले आये।

१०-१५ दिन पश्चात पिढ़ोरा ग्राम के श्री भगतानन्द जी महाराज अब्बासपुर पधारे, जिनसे इन्होंने गुरु दीक्षा ली। इसी समय से ये शिवानन्द कहलाने लगे। ग्राम के ही पं० मथुराप्रसाद के यहाँ यह कार्यक्रम सम्पन्न हु । पं० मथुरा प्रसाद की अर्द्धाङ्गनी भागवती ने भी इसी समय गुरु दीक्षा ली। सभी ग्राम वासियों ने अपने प्रिय शिवानन्द के आचार-विचार देख कर इन्हें साधू कहना प्रारम्भ कर दिया।

इसी ग्राम के जमीदार श्री महेन्द्र सिंह के सुपुत्र गिरन्दसिंह जी ने एक दिन शिवानन्द जी से कहा, "तुम साधू बने फिरते हो और यहाँ पर सूखा पड़ गया है। हम मरे जाते हैं और मेह नहीं बरसता है।" यह बात शान्त भाव से सुन लेने के पश्चात शिवानन्द जी गाँव के बाहर अपने खेतों को कुटिया पर बैठ गये। दो-तीन दिन बाद ही बड़ी घोर वर्षा हुई। गाँव के लोगों ने खुशी मनाई। इन्हें कुटिया से लेकर सभी लोग महादेव के मन्दिर पर चले आये। वहाँ पर बहुत विशाल हवन हुआ। सभी को यह आभास हो गया कि यह शिवानन्द साधू की कृपा से ही हुआ है।

Scanned by CamScanner

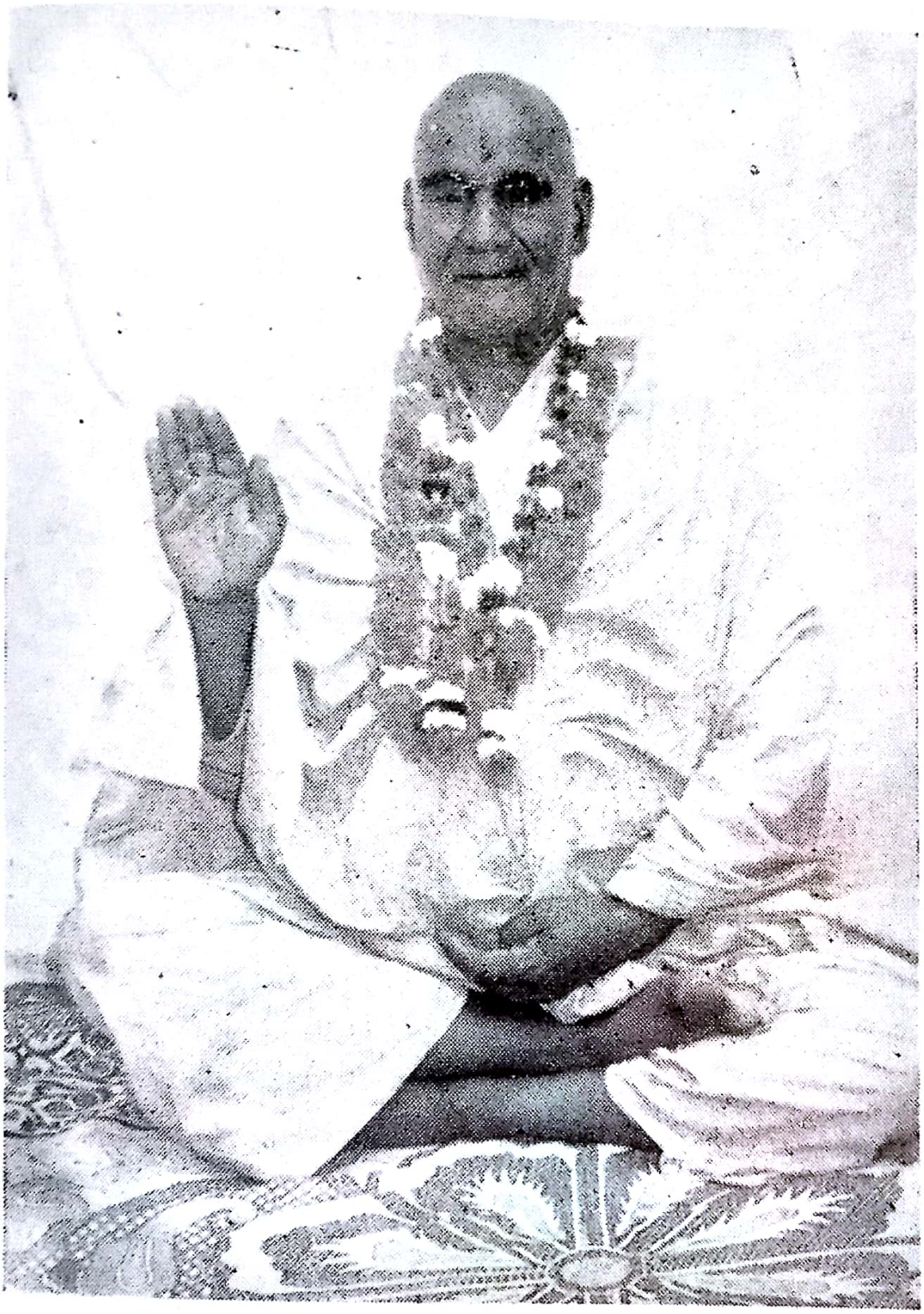

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

(महसपुर वाले)

Scanned by CamScanner

कुछ समय बीत जाने पर ग्राम में पथवारी पर शिवानन्द जी चले आये। गाँव वाले इन्हें मान्यता देने लगे। गाँव के जमीदारों के सहयोग से पथवारी पर मन्दिर बनने का श्री गणेश हो गया। शिवानन्द जी पं० रामानन्द; केदार नाथ एवं प्रभू दयाल चारों आगरा जाकर श्री राधा कृष्ण की मूर्तियाँ ले आये।

ठाकुर जी की स्थापना के समय की एक घटना ने सभी को आश्चर्य में डाल दिया। उस समय यहाँ पर एक कच्चा कुँआ था जिसमें ५०-६० बाल्टी पानी ही निकलता था। ठाकुर जी की प्रतिष्ठा के दिन काफी भीड़ होगी और उस समय पानी की अधिक आवश्यकता पड़ेगी, यह विचार कर आस-पास के कुँओं में पानी खींचने के लिए पुर, बैल आदि का प्रबन्ध किया गया। बहुत भारी संख्या में लोगों के एकत्र हो जाने से प्राण-प्रतिष्ठा के दिन बहुत भीड़ हो जाने पर भी कार्य-क्रम के पूर्ण होने तक कच्चे कुए के पानी से ही पर्याप्त मात्रा में सभी को पानी मिलता रहा, अन्य कुओं से पानी ले आने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। आज भी लोग इसकी चर्चा करते हैं और इसको ठाकुर जी की ही कृपा मानते हैं।

Scanned by CamScanner

इसी मन्दिर में श्री शिवानन्द जी ने रहना प्रारम्भ कर अन्न ग्रहण करना छोड़ दिया। केवल फलाहार पर रहने लगे। यहीं से कुछ प्रेमी जन इन्हें आलमपुर लिवा ले गये। पास में ही लाहटई ग्राम में श्री दूधाधारी महाराज का प्राचीन सिद्ध स्थान (आश्रम) है। इस ग्राम के लोग श्री शिवानन्द जी के अम्पर्क में आये। इन ग्राम वासियों की यह धारणा हो गई कि ये ही दूधाधारी महाराज हैं और इसी कारण उस आश्रम का अध्यक्ष इन्हीं को बना दिया।

श्री शिवानन्द जी के गुरु भाई, श्री भगतानन्द के शिष्य, श्री कोमलसिंह ने श्री गजाधर सिंह पहलवान से होड़ बद ली कि तीन दिन में वर्षा हो जायेगी। श्री शिवानन्द जी ग्राम लाहटई के आश्रम पर थे। श्री कोमलसिंह ने वहाँ जाकर प्रतिज्ञा कर लेने की बात बताई और उन्हें लाहटई से सहसपुर लिवा लाये। ग्राम सहसपुर में श्री महादेव के स्थान पर सब लोग एकत्र हुए एवं हवन का आयोजन किया गया। सूखा पड़ जाने से गर्म हवा चल रही थी। हँसी-हँसी में लोग कहने लगे कि देखो बादल आ रहे हैं। भगवान की ऐसी इच्छा कि हवन होते में ही बड़ी घोर मूसला-धार वर्षा

Scanned by CamScanner

हुई। हवन-कुण्ड में पानी भर गया। आधी सामिग्री बच रही। पानी बरसते में ही हवन की बची सब सामिग्री श्री यमुना जी में प्रवाह करने सभी लोग गये। बाद में श्री स्वामी जी ने कोमलसिंह को समझाया कि अब को तो श्री महादेव बाबा ने प्रतिज्ञा पूर्ण कर दी; आगे भविष्य में कभी ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करना चाहिए।

सम्वत् २०१६ में श्री स्वामी प्रेमानन्द जी के परामर्श से प्रयाग राज जाकर त्रिवेणी संगम पर मेले में आपने श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज (बम्बई वाले) से सन्यास की दीक्षा ले ली। उसके पश्चात बसन्त पंचमी पर सहसपुर ग्राम वासियों के सहयोग से मन्दिर पर विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी महाराज अपने छत्र-चमर-सिंहासन एवं सेवकों सहित अपने इलाहाबाद आश्रम से पधारे। श्री पूज्य चरण प्रातः स्मरणीय महाराज जी (बम्बई वाले) पहले ही पधार चुके थे। राजघाट के निकट नरौरा-नरवर के आचार्यों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। इतना विशाल आयोजन सभी वृद्धजनों की याद में पहले कभी नहीं हुआ था। सैकड़ों झोपड़ियों में साधू-

Scanned by CamScanner

सन्तों को ठहराया गया था। विशिष्ट महापुरुषों के लिये डेरा-तम्बू लगाये गये थे। श्री वृन्दावन धाम के पण्डित श्री राधेश्याम जी भागवत की कथा करते थे। बहुत दूर-दूर से ग्रामीण जन यज्ञ देखने के लिए आते रहते थे। आठ-दस दिन के कार्यक्रम में लाखों प्रेमी जनों ने आकर यज्ञ-भगवान की परिक्रमा की। आस-पास के गाँवों में सभी ग्राम वासियों के नाते रिश्तेदारों के आ जाने से विशाल जन समुदाय ने इस अवसर का लाभ उठाया। आदमियों की इतनी भीड़ थी कि घर पर ठहरने वाले सज्जनों को घर वाले पहचानते तक नहीं थे। आस-पास के सैकड़ों ग्रामों के प्रेमी भक्तों ने हृदय से सहयोग दिया। कार्यकर्त्ताओं को बुलाने का काम लाउडस्पीकर के माध्यम से ही सम्भव हो सकता था। श्री स्वामी शिवानन्द जी ने सभी कार्य-कर्ताओं से कह दिया था कि यह सभी सम्पत्ति भगवान की है; अतः किसी से भी किसी वस्तु के लिये मना न किया जाय।

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी भागवतानन्द जी महाराज (अष्टाबक्र)

पं० जगन्नाथ जी दुबे ग्राम घाटमपुर पो० भीलमपुर जिला जौनपुर उ०प्र० के घर में ज्येष्ठ पुत्र भगवतीदीन का जन्म सन् १८९० ई० में हुआ। दातादीन, कड़ेदीन तथा बल्लू, उमेठा, मुल्लू भगवतीदीन के दो भाई एवं तीन बहनें पैदा हुईं। पं० रामकुमार दुबे लगभग चार वर्ष की अवस्था के बालक भगवतीदीन को झूले में झुला रहे थे। झूले की रस्सी अकस्मात टूट गई। पालने सहित नन्हे बालक के गिरते ही बड़े मोटे ताजे शरीर वाले पं० रामकुमार भी बालक के ऊपर गिरे। इस दैवी घटना से बालक की जान तो बच गई परन्तु हाथ, पैर, छाती टूट गई। बहुत उपचार कराने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। तभी से ये अष्टाबक्र का रूप ले लिये। ऐसी अवस्था में ये घर पर ही बने रहते और पूजा पाठ करते रहते थे।

लगभग ४० वर्ष की अवस्था में पं० भगवतीदीन को श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज (बम्बई वाले) के दर्शन उनके घाटमपुर पधारने पर हुए। उसी समय

Scanned by CamScanner

ये श्री महाराज जी के शरणागत हो गये। महाराज श्री ने आज्ञा दी कि आप श्री रामचरित मानस का १०८ पाठ करें। उसी समय इस अनुष्ठान हेतु दो मन्जिल की एक कुटी सब भाइयों ने मिलकर बनवा दी।

अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात श्री महाराज जी ने इन्हें अपने साथ ले लिया। इस प्रकार श्री महाराज जी के साथ ये बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, फीरोजाबाद, आगरा आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इनका आसन 'अखण्ड संकीर्तन पण्डाल' में रहता था, जिससे संकीर्तन बराबर चलता रहे। समय पर मण्डलियों की ड्यूटी बदलने का कार्य भी इन्हें सोंपा जाता था, जो बहुत महत्वपूर्ण एवं सदैव सतर्क रहने वाली जिम्मेदारी थी।

लगभग पाँच वर्ष इस प्रकार भ्रमण करने के पश्चात श्री प्रयागराज के माघ मेला में बसन्त पंचमी के शुभ महूर्त में श्री महाराज जी से सन्यास की दीक्षा ग्रहण किये। तभी से ये श्री स्वामी भागवतानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हो गये। कुछ समय तक विचरण करने के बाद एक कुटिया में श्री हरि बाबा जी महाराज के बाँध (ग्राम गवां जिला बुलन्दशहर) पर रहने लगे। बड़े-बड़े महोत्सवों एवं पर्वों पर ये वहीं से आते-जाते बने रहे।

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी भागवतानन्द जी महाराज (अष्टाबक्र)

पं० जगन्नाथ जी दुबे ग्राम घाटमपुर पो० भीलमपुर जिला जौनपुर उ०प्र० के घर में ज्येष्ठ पुत्र भगवतीदीन का जन्म सन् १८९० ई० में हुआ। दातादीन, कड़ेदीन तथा बल्लू, उमेठा, मुल्लू भगवतीदीन के दो भाई एवं तीन बहनें पैदा हुईं। पं० रामकुमार दुबे लगभग चार वर्ष की अवस्था के बालक भगवतीदीन को झूले में झुला रहे थे। झूले की रस्सी अकस्मात टूट गई। पालने सहित नन्हे बालक के गिरते ही बड़े मोटे ताजे शरीर वाले पं० रामकुमार भी बालक के ऊपर गिरे। इस दैवी घटना से बालक की जान तो बच गई परन्तु हाथ, पैर, छाती टूट गई। बहुत उपचार कराने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। तभी से ये अष्टाबक्र का रूप ले लिये। ऐसी अवस्था में ये घर पर ही बने रहते और पूजा पाठ करते रहते थे।

लगभग ४० वर्ष की अवस्था में पं० भगवतीदीन को श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज (बम्बई वाले) के दर्शन उनके घाटमपुर पधारने पर हुए। उसी समय

Scanned by CamScanner

ये श्री महाराज जी के शरणागत हो गये। महाराज श्री ने आज्ञा दी कि आप श्री रामचरित मानस का १०८ पाठ करें। उसी समय इस अनुष्ठान हेतु दो मन्जिल की एक कुटी सब भाइयों ने मिलकर बनवा दी।

अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात श्री महाराज जी ने इन्हें अपने साथ ले लिया। इस प्रकार श्री महाराज जी के साथ ये बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, फीरोजाबाद, आगरा आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इनका आसन 'अखण्ड संकीर्तन पण्डाल' में रहता था, जिससे संकीर्तन बराबर चलता रहे। समय पर मण्डलियों की ड्यूटी बदलने का कार्य भी इन्हें सोंपा जाता था, जो बहुत महत्वपूर्ण एवं सदैव सतर्क रहने वाली जिम्मेदारी थी।

लगभग पाँच वर्ष इस प्रकार भ्रमण करने के पश्चात श्री प्रयागराज के माघ मेला में बसन्त पंचमी के शुभ महूर्त में श्री महाराज जी से सन्यास की दीक्षा ग्रहण किये। तभी से ये श्री स्वामी भागवतानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हो गये। कुछ समय तक विचरण करने के बाद एक कुटिया में श्री हरि बाबा जी महाराज के बाँध (ग्राम गवां जिला बुलन्दशहर) पर रहने लगे। बड़े-बड़े महोत्सवों एवं पर्वों पर ये वहीं से आते-जाते बने रहे।

Scanned by CamScanner

वर्ष १९७४ ई० के महा कुम्भ में अपनी साधना स्थली बजरंगबाग से श्री महाराज जी के साथ ही 'अखण्ड संकीर्तन शिविर' में पधारे। इस समय इनका शरीर काफी दुर्बल हो गया था। गंगा-यमुना के मध्य, कुम्भ मेला के महान पर्व पर, बसन्त पंचमी के दिन तीर्थ राज प्रयाग की पावन भूमि में श्री महाराज जी के दर्शन करते हुए इस नश्वर शरीर को त्यागकर ब्रह्म में लीन हो गये।

श्री स्वामी भागवतानन्द जी की पुण्य स्मृति में ग्राम घाटमपुर में श्री बजरंगबली की मूर्ति की स्थापना हो गई है। अब यह स्थान बजरंग बाग के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। पं० कड़ेदीन एवं अन्य सहयोगियों के द्वारा मन्दिर के प्रांगण में कथा, कीर्तन आदि का आयोजन होता रहता है।

गुरुविन भवनिधि तरइ न कोई,
जो विरंचि शंकर सम होई।
गुरु के वचन प्रतीति न जेही,
सहनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही॥

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी महादेवानन्द जी महाराज

ग्राम धारिकपुर (सुजानगंज) जिला जौनपुर निवासी श्रीकृष्ण दत्त उपाध्याय बड़े जमींदार के घर बालक महादेवानन्द का जन्म सन् १८९० में हुआ। बाल काल में निकटवर्ती ग्राम भुइंधरा की पाठशाला में पढ़ने जाने लगे। एक दिन खेल-खेल में इनके हाथ का कढ़ा चरित्र नायक के माथे पर लग जाने से चोट का चिन्ह बन गया। यह देख सभी साथी गम्भीर हो गये परन्तु बालक कृष्णानन्द हँसने लगे।

बड़े होने पर पं० महादेवानन्द अपनी जमींदारी एवं काश्तकारी के कामों की देखभाल करने लग गये। इनके यहाँ हाथी बँधा रहता। उर्दू तथा हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। सभी प्रकार का वैभव होते हुए भी सरलता एवं नम्रता कूट-कूट कर भरी थी।

बचपन से ही साधु स्वभाव के थे और अपना समय भगवत-भजन, साधु सन्त के आदर-सत्कार में देते। जनकपुर एवं दूर-दूर से सन्त-महात्मा इनके घर पर आते रहते, जिससे इन्हें सत्संग का लाभ सदा मिलता रहता।

Scanned by CamScanner

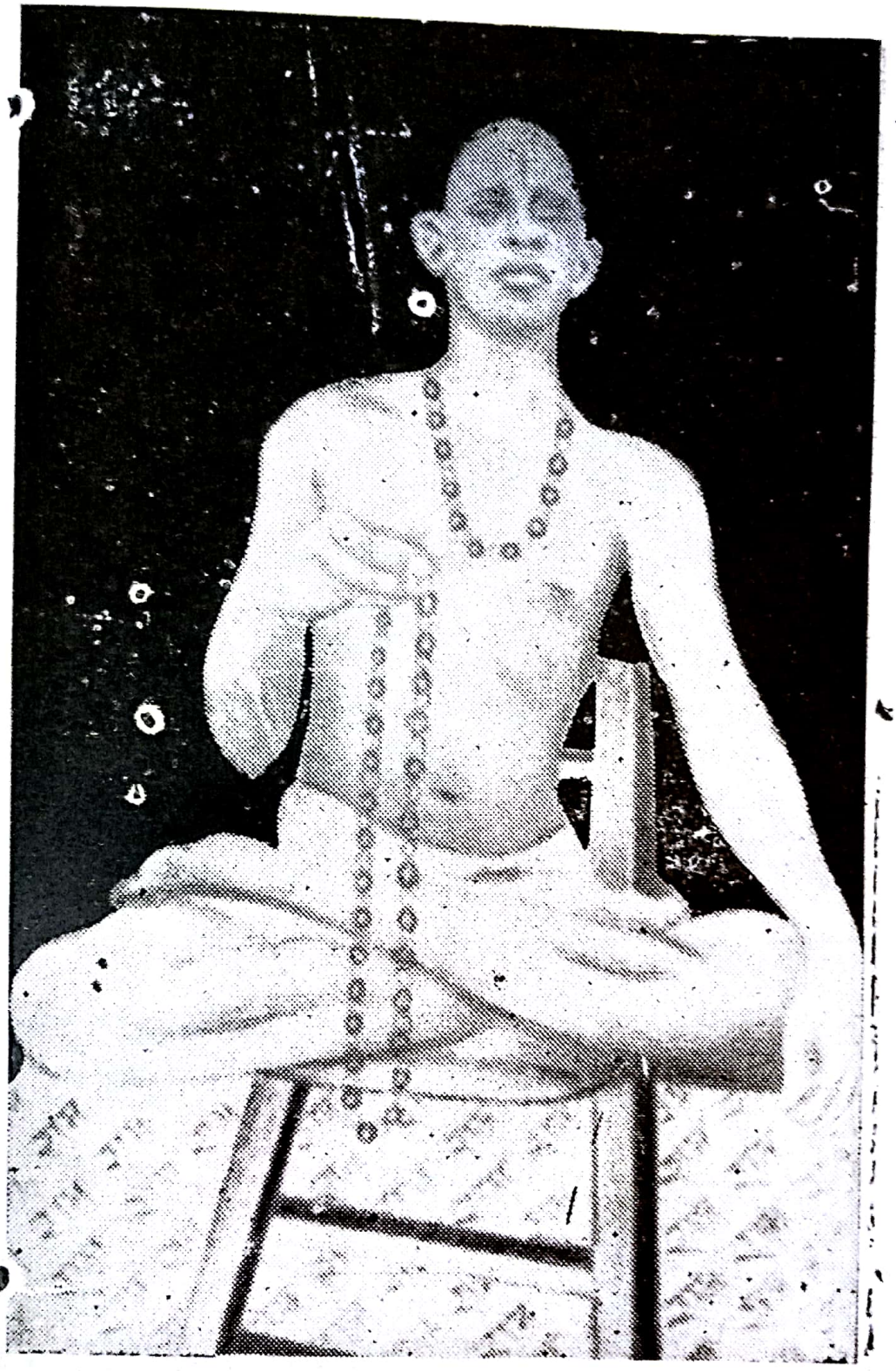

श्री स्वामी महादेवानन्द जी महाराज

Scanned by CamScanner

चारों धाम की यात्रा विधिवत पूर्ण कर लेने के पश्चात इन्होंने १९५७ के माघ मेले में चरित्र नायक से सन्यास की दीक्षा ले ली। इसी समय से ये स्वामी महादेवानन्द कहलाने लगे।

श्री स्वामी जी महाराज (बम्बई वाले) के साथ-साथ इन्हें कई स्थानों पर भ्रमण पर जाने का अवसर भी प्राप्त होता रहा। आगे चलकर ये बहुत गम्भीर एवं शान्त रहने लगे। वर्ष १९६५ में धर्मनगर में अखण्ड संकीर्तन यज्ञ, रासलीला महोत्सव का आयोजन बड़े समारोह के साथ किया गया। इसी समय श्री स्वामी महादेवानन्द जी अस्वस्थ होने के साथ ही बहुत दुर्बल हो गये। श्री महाराज जी ने इन्हें घर भिजवाने की सलाह दी परन्तु इन्होंने श्री चरणों को छोड़कर धर्मनगर से अन्यत्र कहीं जाने से मना कर दिया। कुछ ही दिनों बाद ऐसे शुभ महूर्त में, श्री महाराज जो की उपस्थिति में ये ब्रह्मलीन हो गये। महोत्सव में दूर-दूर से पधारे अनेकों भक्तगण श्री स्वामी महादेवानन्द के भाग्य की भूरि-भूरि सराहना करने लगे।

इनके सुपुत्र श्री सत्यनारायण उपाध्याय छोटेपन से ही श्री महाराज जी (बम्बई वाले) की सेवा में रहने

Scanned by CamScanner

लगे। बड़ी-बड़ी सभाओं में चरित्र नायक की आज्ञा से कार्य-क्रम के प्रारम्भ में इन्हें, 'जय लाल लंगोटा वाले, हनुमान अंजिनी के' पद संकीर्तन पंडाल में एकत्रित जनता-जनार्दन से बुलवाने के लिए समय दिया जाता। इनकी तुमुल ध्वनि सारे वातावरण में फैल जाती और पीछे बोलने वाले सज्जन वृन्द शान्तचित्त होकर आगे के कार्य-क्रमों की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगते। श्री सत्यनारायण जी को चरित्र नायक की सेवा में रहकर भारत के तीर्थ-स्थल, समुद्र-तट, बियावान-जंगल एवं महानगरों में भ्रमण पर जाने का खूब संयोग मिला। आजकल ये गाँव में ही रहकर संकीर्तन मण्डल के साथ भगवन्नाम के प्रचार कार्य में सहयोग देते रहते हैं।

भक्ति और ज्ञान

भक्ति माने अपनी मानी हुई सम्पूर्ण वस्तुओं को पूर्णता की सेवा में लगा देना और ज्ञान माने अपनी परिच्छिन्नता को मिथ्या जानकर अपरिच्छिन्न से एक कर देना।

Scanned by CamScanner

संकीर्तनाचार्य पंडित वासुदेव जी मिश्र आचार्य

पं० वासुदेव जी मिश्र का जन्म सन् १९०० ई० विलवार ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० रामवरन मिश्र था। इनके छोटे भाई श्री महादेव जी मिश्र एवं रामदेव जी मिश्र हैं।

बाल काल से ही ये चरित्र नायक के अभिन्न मित्र बन गये एवं सहपाठी के रूप में बड़ी घनिष्टता हो गई। धनोपार्जन के लिये बम्बई पहुँचने पर अपने बचपन के अन्य साथियों के साथ इन्हें भी बम्बई बुलाकर अपने साथ उसी फर्म में नौकरी पर लगा कर उदार-मना श्री कृष्णानन्द जी ने अपने सुख को साथियों में बाँट, एक मित्र के साथ दूसरे मित्र के प्रति कर्तव्य एवं धर्म का आदर्श प्रस्तुत कर दिखाया। ये दोनों ही प्रातः उठ जाप, पूजा-पाठ, हवन आदि नित्य कर्म में लग जाते थे। कभी-कभी एक ही साथ भगवान के स्मरण-ध्यान में आनन्द विभोर हो जाते थे।

आगे चलकर चरित्र-नायक ने इन्हें श्री उड़िया बाबा जी महाराज के दर्शन वृन्दावन ले जाकर कराये

Scanned by CamScanner

पंडित भवानी चरण जी व्यास

ग्राम बिलवार जिला जौनपुर के पंडित बद्री-प्रसाद पाण्डेय के घराने में अयोध्या प्रसाद, शाहिनाथ एवं भवानी चरण तीन पुत्रों के जन्म हुए। सबसे छोटे भवानी चरण का जन्म १९०६ ई० में हुआ। जिन्हें चरित्र नायक के सखा रूप में बालकाल से ही साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। ग्राम के अन्य नवयुवकों के प्रथम पंक्ति में ये बम्बई चले गये। तैयब अली इब्राहिम अली के यहाँ रेन्ट कलेक्टर का कार्य बड़ी कुशलता पूर्वक करते एवं किरायेदारों के साथ अपनी व्यवहार कुशलता का परिचय देते हुए उन्हें सदैव सन्तुष्ट रखते। १०-१५ वर्ष बम्बई रहने के पश्चात अपने ग्राम में रहने लगे।

चरित्र नायक के सन्यास ग्रहण के पश्चात प्रथम बार बम्बई पदार्पण के समय से ही पं० भवानी चरण का पुनः साथ हो गया। इस अवसर पर इन्होंने अन्य मित्रगणों के साथ सत्संग-भवन दादी सेठ अग्यारी लेन बम्बई नं० २ में आयोजित एक मास के अखण्ड संकीर्तन के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने में सराहनीय सहयोग दिया। आगे चलकर ये पं० भवानी चरण व्यास

Scanned by CamScanner

(ब्रह्मचारी जी) के नाम से प्रसिद्ध हुए।

श्री महाराज जी के साथ भारत के महानगरों, तीर्थ स्थानों, ग्रामीण क्षेत्रों आदि जगहों पर छोटे-बड़े महोत्सवों में, बड़ी-बड़ी सभाओं में इनके पदगान; कथा-कीर्तन के लिए समय दिया जाता। ये अपनी आकर्षक एवं मधुर ध्वनि से सभी को मन्त्र-मुग्ध कर बड़ी ही सारगर्भित तथा उपदेशात्मक कथा-प्रवचन सुनाते।

इनके सुपुत्र श्री ब्रिज भूषण पाण्डेय के ऊपर चरित्र-नायक की अपार कृपा बनी रही। पं० ब्रिज-भूषण स्वतंत्रता सेनानी हैं, जो ग्राम बिलवार के पोस्ट आफिस का संचालन करते रहे।

भजन करन को आलसी, खाने को हुशियार।
'तुलसी' ऐसे नरन को, बार-बार धिक्कार॥
कहत हौं कहे जात हौं कहों बजाकर ढोल।
सांसा बीता जात है, लाख करोड़ का मोल॥
'आस पास जोधा खड़े रहे, बजावत गाल।
बीच महल से ले गया, ऐसा काल कराल॥
जब तू आया संसार में, जग हँसे तू रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तू हँसे जग रोय॥

Scanned by CamScanner

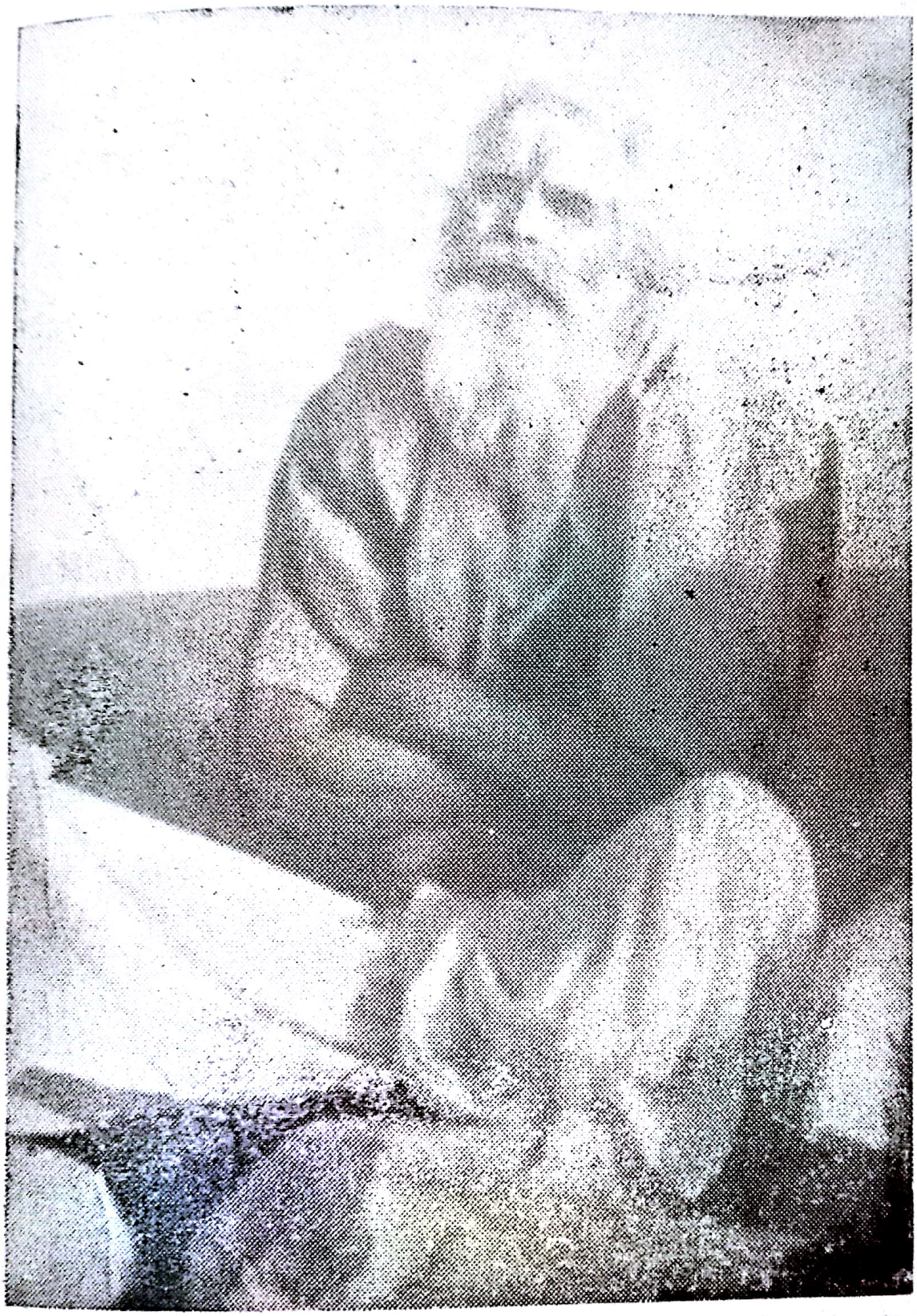

पण्डित भवानीचरण जी व्यास

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी मोहनानन्द जी महाराज

इनके पिता श्री बेनीमाधव उपाध्याय निवासी ग्राम घाटमपुर जिला जौनपुर भगवती दुर्गा के अनन्य उपासक थे। माता जी का नाम श्रीमती महारानी देवी था। ये पांच भाई थे। शिवमूरत, शिवसूरत, गौरीशंकर भूतनाथ एवं रमानाथ। बालक रमानाथ की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई। तद्उपरान्त ये वाराणसी पढ़ने चले गये। वाराणसी से एक बार माघ अमावस्या पर घाटमपुर आये। उस समय इनके माता एवं पिता गंगा स्नान के लिए प्रयाग गये थे। इन्होंने अपनी भाभी से कहा कि हम २-३ दिन के लिए बाहर जा रहे हैं; पिता जी के लौटने तक वापस आ जायेंगे। १८ वर्ष की अवस्था में ऐसा कहकर ये निकल गये। परन्तु जब ये नहीं लौटे तो पिता जी कई साथियों सहित बम्बई, कलकत्ता आदि शहरों में खोजने के लिए गये। इस प्रकार ६-७ साल बीत गये, तो सब निराश हो गये। बम्बई में गाँव के रामदेव यादव, जिनकी कोयले की दूकान वहाँ थी ने रमानाथ को सड़क पर जाते हुए देखकर प्रणाम कर पकड़ लिये। तब रमानाथ ने

Scanned by CamScanner

बताया कि वे सन्यास आश्रम विलेपारले में श्री स्वामी जी महाराज (बम्बई वाले) के साथ रह रहे हैं।

यादव जी के घर पर तार दिया, तब घर वाले जाकर श्री महाराज जी से मिले और उनकी आज्ञा से रमानाथ घर चले आये। साल भर कुटी बनाकर बगिया में रहे। फिर श्री महाराज जी के साथ ब्रह्मचारी भेष में चले गये। कई वर्षों तक श्री महाराज जी के साथ रहकर श्रीमद् भागवत की कथा आदि कहने में व्यतीत किया। इसके पश्चात श्री महाराज जी की आज्ञा से न्याय मीमासां पढ़ने के लिए वाराणसी चले गये। वहाँ से वेदान्त, व्याकरण आयुर्वेदाचार्य की परीक्षाऐं पास कर श्रीमद्भागवत् में पारङ्गत हुए।

इसके पश्चात श्री स्वामी लम्बेनारायण जी महाराज के आश्रम ग्राम कलोल जिला मेहसाना (गुजरात) के ट्रस्टाधिपति बने। इस आश्रम को शान्ति से भजन करने की इच्छा से एक सन्यासी को सौंपकर श्री नर्मदा जी के तट पर घोर जंगल में तपस्या करने के लिए चले गये। तत्पश्चात श्री वृन्दावन धाम में परिक्रमा मार्ग पर एक आश्रम की स्थापना की। यहाँ से ये विभिन्न स्थानों पर प्रवचन आदि करने के लिए जाते रहते थे।

Scanned by CamScanner

जब श्री हनुमान मन्दिर की स्थापना धर्मनगर में हुई तो क्वार के दशहरे पर ये धर्मनगर आये। इसी अवसर पर धर्मनगर में मन्दिर के ट्रस्ट की स्थापना हुई। वृन्दावन से आकर इन्होंने अपने गाँव में एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना भी की।

श्री लम्बे नारायण जी के आश्रम में पहुँचकर श्री स्वामी हरि प्रकाशानन्द तीर्थ से गुरु दीक्षा लेकर दण्ड धारण किया।

इनके भतीजे शिवमूरत के पुत्र श्री जगदम्बा-प्रसाद पाण्डे एम०ए० श्री स्वामी मोहनानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय भोलमपुर में अध्यापक हैं।

अन्त समय में अकस्मात दण्डी स्वामी मोहनानन्द जी बीमार हो गये, तब इन्हें श्री रामकृष्ण मिशन अस्पताल में उपचार हेतु भरती कराया गया। तत्-पश्चात लाल नर्सिंग होम में ले जाया गया जहाँ इनका देहावसान हो गया।

Scanned by CamScanner

पं० रामकिशोर जी पाण्डेय

चरित्र नायक के लघु भ्राता पं० रामकिशोर उसी गर्भ से सम्वत् १९६० में पैदा हुए। अतः उनके बहुत से गुण जैसे नम्रता, सरलता, दया, धर्म-कर्म इनमें भी आ गये। ये श्री महाराज जी से १४ वर्ष छोटे थे और उनके सन्यासी होने की खबर फैलते ही सेठ चिम्मनराम मोती लाल फर्म के सेठों ने सलाह कर नव-युवक रामकिशोर को बम्बई बुला लिया। खेती आदि का भार अपने चाचा माता प्रसाद पर छोड़कर ये बम्बई आकर वहीं कार्य करने लग गये। धर्मात्मा सेठ और सेठानी इन्हें आदर सहित धन, वस्त्र आदि देते रहते; जिसे ये समय-समय पर जीवन-यापन हेतु घर भिजवा देते। उसी समय ये गांधी जी के स्वतंत्रता-संग्राम आन्दोलन से प्रभावित होकर कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। बम्बई और बिलवार दोनों जगह स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेते रहते थे। सन् १९३७ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में इन्हें दो मास का कारावास दण्ड हुआ। पश्चात सन् १९४२ की अगस्त क्रान्ति में ये फरार रहे। जिसके कारण इनका घर लूटा

Scanned by CamScanner

फूंका गया। भूमिगत होकर ये आजादी की लड़ाई लड़ते रहे। श्री महाराज जी से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम पेंशन नहीं लिए।

कुछ समय बीतने पर पं० रामकिशोर बम्बई से आकर घर का कार्यभार सम्हालने के साथ ही कीर्तन प्रचार कार्य में खूब रुचि लेते रहे। प्रति वर्ष चरित्र नायक के जन्मोत्सव का आयोजन अगहन सुदी पूर्णिमा को बड़े समारोह के साथ आपकी अध्यक्षता में सम्पन्न होता रहा।

६ जनवरी १९९३ में चरित्र नायक की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा श्री स्वामी कृष्णानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिलवार के प्रांगण में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अखण्ड संकीर्तन, श्री विष्णु महायज्ञ, कथा-प्रवचन के आयोजन श्री रामजीत उपाध्याय, श्री रामसमुझ तिवारी एवं श्री ओंकारनाथ शुक्ल एडवोकेट के सतत् प्रयास से पूर्ण हुए; जिसमें आस-पास के सभी ग्राम वासियों ने अपने आराध्य देव को तन, मन, धन से श्रद्धांजलि समर्पित की।

दिनांक १२ फरवरी १९९३ को पं० रामकिशोर जी का देहावसान हो गया। इनके सुपुत्र श्री राधेश्याम

Scanned by CamScanner

अध्यापक मारवाड़ी कामर्शियल हाई स्कूल गजधर स्ट्रीट बम्बई में पढ़ाते थे, जो सेवानिवृत होकर विलवार आ गये हैं, जिनके पुत्र श्री रमेशचन्द्र पाण्डेय एडवोकेट हैं।

मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ।
वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नां कायस्तत्प्रह्वणादिषु ॥
कर्मभिर्भ्राम्यमाणनां यत्र क्वापीश्वरेच्छया ।
कुशलाचरितैर्दानै रतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ॥

[हमारे मनकी वृत्तियां श्रीकृष्ण के चरणकमलों में लगी रहें, वाणी नाम का गान करती रहे और शरीर उनकी सेवा नमस्कार आदि में लगा रहे। ईश्वर की इच्छा से कर्मों के अनुसार चाहे जिस योनि में जन्म हो हमारे सब धर्माचरणों और दोनों के परम लक्ष्य हमारे श्री कृष्ण में हमारी प्रीति हो।]

Scanned by CamScanner

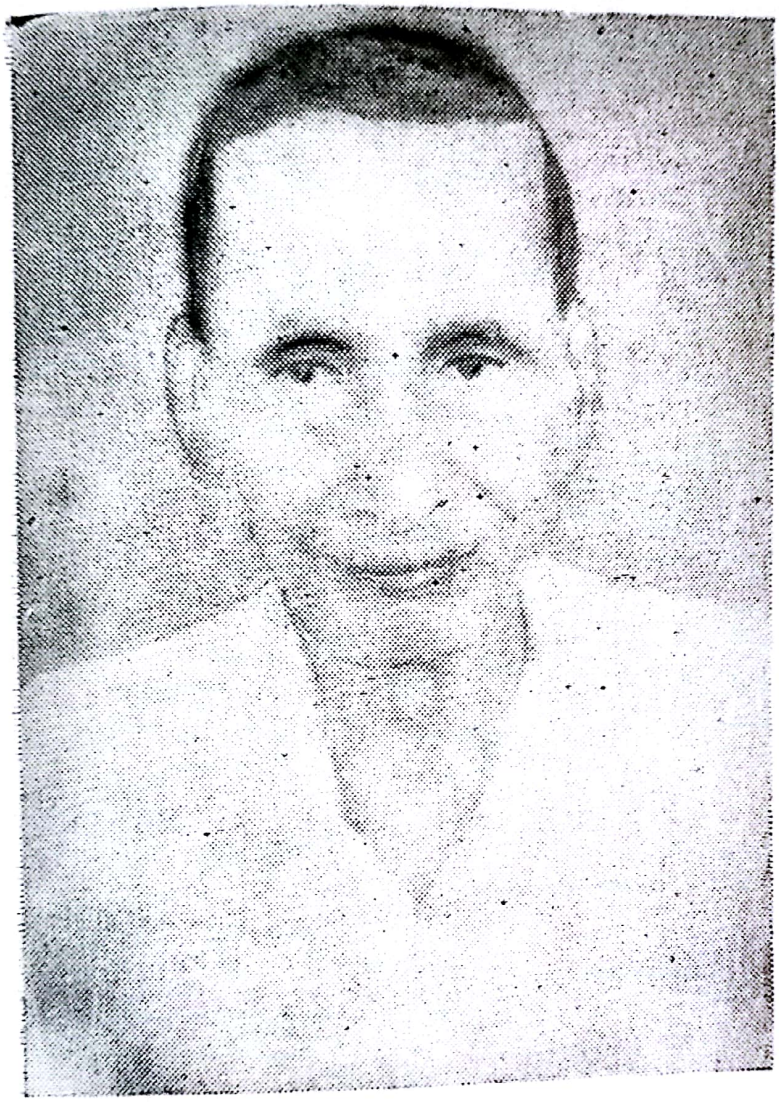

पं० रामकिशोर जी पाण्डेय

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी गोकुलानन्द जी महाराज

पंडित कृष्णानन्द जी शुक्ल एवं रामकली के सर्वोच्च ब्राह्मण कुल में ग्राम कुसमौल पोस्ट रामापुर कुन्दहा जिला जौनपुर के यहाँ अमरनाथ, भोलानाथ, पारसनाथ एवं गोपीनाथ चार बालकों का जन्म हुआ। सन् १९२४ में सबसे छोटे बालक गोपीनाथ का जन्म हुआ।

बचपन में बालक गोपीनाथ जानवर चराने के लिए जाने लगे। दूध देने वाले पशुओं की संख्या अधिक होने के कारण इन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता। अतः ये अन्य बालकों से अपने जानवरों की देख रेख करने के लिए कहते। जिन बालकों के पास दाना-चबेना नहीं होता उन्हें अपने पास से दे देते। एक-दो बालकों को सायं काल भोजन के लिए भी निमन्त्रण दे देते। रात्रि में जब ये बालक घर पर पहुँच जाते तो घर वालों को पता चलता। इस प्रकार एक-दो बालक प्रतिदिन भोजन करके चले जाते। इस प्रकार इन्हें पशुओं के चराने में बड़ी सहायता मिल जाती।

चौदह वर्ष की आयु में सातवीं कक्षा तक पढ़ाई

Scanned by CamScanner

समाप्त कर ये खेती का काम काज देखने लगे। इनके माता जी एवं पिता जी के देहान्त एक साथ ही हो गये। ग्राम नीमापुर में ससुराल की ४४ बीघा जमीन इन्हें मिली, जिसमें खेती आदि की व्यवस्था हेतु इन्हें आना जाना पड़ता। अन्त में ससुराल की सारी जमीन जायदाद को इन्होंने छोड़ दिया। ग्राम अचकारी में १८ बीघा तथा रामापुर कुन्दहा के शिष्य से जो जमीन प्राप्त हुई उसका भी बैनामा लिखाकर मकान आदि बनवा दिया। इस प्रकार कई स्थानों पर मिली सम्पत्ति पर अपना अधिकार नहीं रक्खा।

इन्हें पिछड़े एवं असहाय वर्ग के लोगों की मदद करने में बहुत संतोष मिलता। आस-पास के ग्रामों के मृतकों को गंगा जी तक ले जाने के आदि की व्यवस्था कर, पारिवारिक जनों को अन्न-धन से सहायता कर देते। एक बार अपनी माता जी के शव को वाराणसी टैक्सी द्वारा ले जाते समय रास्ते में एक स्त्री विलाप करती हुई मिली, जो अपने पति के शव का दाह संस्कार करने की प्रतीक्षा में सड़क के किनारे खड़ी थी। इन्होंने उस अपरिचित स्त्री के पति के शव को टैक्सी में रख लिया और स्त्री को साथ ले जाकर विधिवत दाह-संस्कार आदि का पूरा खर्चा अपने पास से कर, वापसी

Scanned by CamScanner

में उस स्त्री को पुनः उसी स्थान पर छोड़ दिया।

कुछ समय के लिए मध्य प्रदेश में वन-विभाग के ठेकेदार के यहाँ नौकरी कर अपने गाँव वापस आ गये। चरित्र नायक के सम्पर्क में आने के पूर्व छः माह तक हरी शाक-सब्जी, फल खाकर जीवन निर्वाह करते रहे और अगले छः माह केवल बेल-पत्र खाकर या पीसकर पीकर व्यतीत किये। कभी-कभी गर्मी शान्त करने के लिए बबूल की पत्ती पीसकर पी लेते।

प्रयागराज के अर्धकुम्भ के महान पर्व पर वर्ष १९७१ में चरित्र नायक से सन्यास की दीक्षा ले लिये। सन्यास लेने के बाद वर्ष १९७२ में शिवरिहा ग्राम में प्राइमरी पाठशाला एवं निकट ही वर्ष १९७३ में स्वामी गोकुलानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय की स्थापना कर दिये। इसके पश्चात श्री महाराज जी के साथ रह कर अपने को उनकी सेवा में समर्पित कर दिये।

बड़े ही साहस एवं त्याग का परिचय देते हुए। धर्मनगर की चार एकड़ भूमि का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिये। ग्राम बाबूपुर के श्री माता प्रसाद के मार्फत कलकत्ता निवासी एक अग्रवाल सेठ ने मन्दिर निर्माण हेतु रु० ४०,००० दान में देने के लिये विचार

Scanned by CamScanner

किया था। श्री महाराज जी ने इन्हें केवल रु० २५,००० ही लेने की सलाह दी। कुछ ही दिनों में आपने श्री हनुमान जी के मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा करा दिया।

मन्दिर के लिए श्री हनुमान जी की मूर्ति श्री महाराज जी (बम्बई वाले) ने आगरा से भिजवाई थी। जिसे कीर्तन मण्डल के सदस्य श्री गायत्री प्रसाद, पं० गुरु प्रसाद, श्री ईश्वर दत्त एवं स्वामी शंकरानन्द जी मेटाडोर टैक्सी द्वारा टैगोर टाउन इलाहाबाद लेकर आये थे। सन् १९७८ माह अप्रैल में श्री हनुमान जयन्ती के पर्व पर मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा व। समारोह चरित्र नायक की संरक्षता में बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

अब पूरे धर्मनगर परिसर का क्षेत्र ८ एकड़ हो गया है, जिसमें एक ट्यूवैल, पक्का कुँआ एवं कुटी का निर्माण हो चुका है। आंवला, आम, कटहल आदि के लगभग ८० वृक्ष तैयार हो चुके हैं।

निकट भविष्य में चरित्र नायक की मूर्ति स्थापना हेतु तैयारी हो रही है। जिसके लिए श्री हनुमान मन्दिर से लगी हुई जगह पहले से निश्चित है और नीव भी भरी जा चुकी है।

आपके द्वारा प्रति वर्ष माघ मेला प्रयागराज में

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी गोकुलानन्द जी महाराज

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज (बम्बई वाले) अखण्ड संकीर्तन शिविर का संचालन तथा विभिन्न स्थानों पर नवरात्र महोत्सव जन्म महोत्सव, गुरु पूर्णिमा महोत्सव आयोजित किये जाते हैं। श्री गोकुलानन्द जी जब से सन्यास की दीक्षा लिए तभी से इन सभी महोत्सवों में संकीर्तन कलानिधि पं० गायत्री प्रसाद उपाध्याय निवासी ग्राम धारिकपुर (प्रेम का पूरा) जिला जौनपुर अपना पूर्ण सहयोग देते रहते हैं।

कुसमौल ग्राम धर्मनगर से तीन कि०मी० है; जहाँ धर्मपत्नी तुलसादेवी रहती हैं। पुत्री किरन का विवाह हो जाने पर अपने ससुराल गोरखपुर रहती हैं। दोनों बड़े भाई खेती का कार्य देखते हैं।

पतंग एक बार रोशनी देखने पर फिर अंधकार में नहीं जाता, चींटियाँ गुड़ में प्राण दे देती हैं, पर वहाँ से लौटती नहीं। इसी प्रकार भक्त जब प्रभु के मार्ग में एक बार पग रख देते हैं, तो उसके लिये प्राण दे देते हैं, पर लौटते नहीं।

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी राघवानन्द जी महाराज

आगरा जिला अन्तर्गत ग्राम नगला हरसुख निवासी पंडित छोटेलाल एवं धर्मपत्नी राम श्री के साधाराण जमीदार परिवार में चार पुत्र एवं दो पुत्री ने जन्म लिया। सबसे बड़े बालक रघुनाथ प्रसाद एवं बहन वीरमति के पश्चात सन् १९२८ सम्वत् १९८४ में चैत्र बदी अमावस्या दिन शनिवार को बालक रघुवीर प्रसाद का जन्म हुआ। तत्पश्चात कालीचरण, रामबेटी एवं पुरुषोत्तम उत्पन्न हुए।

बालकाल से ही बालक रघुवीर को भगवान की भक्ति, माता-पिता को सेवा, ब्रह्मचर्य पालन, दीन दुखियों की सेवा, धर्मपालन एवं भगवान के नाम में बड़ी प्रीति थी। ऐसा देखकर सभी ग्रामवासी इस बालक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने लगे।

आश्चर्यमय घटना :—

ये चतुर्थ कक्षा प्राइमरी पाठशाला हसनपुर से पास कर सेमरा के मिडिल स्कूल में पढ़ने जाने लगे। एक दिन रास्ते में एक दिव्य पुरुष का दर्शन हुआ और वे बोले, "बेटा ! हमारा एक कहना मानोगे ?" बालक

Scanned by CamScanner

रघुवीर ने हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से कहा, आजीवन आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। वे बोले, "चालीस वर्ष तक अपना विवाह मत करना।" इतना कहकर वे अन्तर्ध्यान हो गये। बालक रघुवीर ने उन्हें चारों ओर खोजा, परन्तु कहीं पता न लगा। बालक उनकी साँवली छवि का ध्यान कर बार-बार रोने लगा और मन ही मन विचार करने लगा कि चालीस वर्ष की आयु तक विवार न करने के लिए क्यों कहा।

कुछ वर्ष मिडिल की कक्षा में आने पर हाथ पक जाने के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़ी। थोड़े काल तक खेती करने एवं कुछ समय तक नौकरी के कार्य में लगे रहे। इसी बीच ३२ वर्ष की आयु तक श्री दाऊ जी के दर्शन हर पूर्णिमा को करते रहे। इसी अवधि में तीन वर्ष हर पूर्णिमा को श्री दाऊ जी के दर्शनों के साथ ही श्री गिर्राज महाराज की सात कोसी परिक्रमा भी की; जिसमें एक परिक्रमा लेटकर (जिसे डण्डोती कहते हैं) की। यग्योपवीत संस्कार श्री बाबा रामचरण दास जी (बुन्देलखण्ड वाले) ने आगरा पूर्ण किया।

श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज का प्रथम दर्शन सन् १९५० में हुआ। ये गाँव के बाहर एक धर्मशाला

Scanned by CamScanner

पर आकर रहे। रघुवीर प्रसाद भी गृह कार्य से निवृत होकर स्वामी जी की सेवा में पहुँच जाते और वहीं रहते। इनके मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न होने के कारण इन्होंने स्वामी जी से प्रार्थना की कि आप मुझे सन्यास देने की कृपा करें। स्वामी जी ने कहा कि अभी अपने माता-पिता की सेवा करो।

परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज (बम्बई वाले) का प्रथम दर्शन:-

जैसे-जैसे समय बीतता गया स्वामी प्रेमानन्द जी का गाँव में आना-जाना बना रहने से उनका अच्छा प्रभाव पड़ा और उनके अनेक शिष्य बन गये। सभी प्रेमियों ने प्रार्थना की कि आप अपने पूज्य गुरुदेव भगवान के हम लोगों को दर्शन लाभ प्राप्त कराने की कृपा अवश्य करें। स्वामी प्रेमानन्द जी के द्वारा ग्रामवासियों की इस प्रार्थना को स्वीकार कर सन् १९५५ के चैत्र मास में पूज्य (बम्बई वाले) महाराज जी ने सभी ग्राम वासियों तथा आस-पास के ग्रामों के अनेकों नर-नारियों को दर्शन देकर कृतार्थ किया। इसी समय से रघुवीर प्रसाद ने अपने हृदय में पूरा जीवन महाराज श्री की सेवा में देने का निश्चय कर लिया।

Scanned by CamScanner

श्री स्वामी राघवानन्द जी महाराज

Scanned by CamScanner

दिव्य पुरुष का पुनः दर्शन :–

एक बार जब रघुवीर प्रसाद श्री गिर्राज महाराज की परिक्रमा कर रहे थे, उस समय वही दिव्य पुरुष, जिनका दर्शन स्कूल पढ़ने जाते समय पहले हुआ था, कृष्ण रूप में प्रकट हुए और कहा, "तुम किस लिए आये थे और क्या कर रहे हो।" इतना कहकर फिर अन्तर्ध्यान हो गये। रघुवीरप्रसाद को बहुत विस्मय हुआ।

परम पूज्य महाराज जी की सेवा में :–

महाराज श्री जब श्री वृन्दावन धाम में पधारते तब रघुवीर प्रसाद सेवा का अवसर प्राप्त कर लेते। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर जब भी संयोग बन जाता महाराज श्री की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता। सन् १९७२ के मई माह में श्री महाराज जी माता श्री आनन्दमई के जन्म महोत्सव में सम्मिलित होकर दिल्ली से कलकत्ता के लिए प्रस्थान किये। कलकत्ता (पोदरा) में ही चातुर्मास मनाने का कार्य-क्रम बना था। अतः रघुवीर प्रसाद को दिल्ली से ही साथ-साथ कलकत्ता का सुअवसर प्राप्त हुआ। शिवराम शर्मा एवं श्याम सुन्दर शर्मा भी कलकत्ता महाराज श्री की सेवा में पहुँच गये। इन सभी को एक माह पूज्य

Scanned by CamScanner

महाराज जी की सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ।

एक दिन रघुवीर प्रसाद ने महाराज जी से प्रार्थना की, "आप मुझे सन्यास देने की अति कृपा कीजिये।" श्री महाराज जी ने मन्त्र देकर कहा, "अभी माता-पिता की सेवा करो। त्याग का नाम सन्यास है। कपड़े रंग लेने से सन्यास नहीं होता है।"

श्री महाराज जी के यह बताने पर कि रघुवीर प्रसाद सन्यास लेना चाहता है, शिवराम को हँसी आ गई। शिवराम को हँसी आने पर श्री महाराज जी ने एकान्त में शिवराम से कहा, "तुम्हें रघुवीर के बारे में कुछ पता नहीं। यह कोई देवता भूल से तुम्हारे गाँव में टपक गया है। तुम देखना यह देवता बनेगा, आज तुम हँसते हो।" इस बात को सुनकर शिवराम* भ्रम में पड़ गये कि ये तो रात-दिन हमारे साथ रहते,

---

* नोट- [१] इस रहस्यमय घटना को डाक्टर शिवराम शर्मा ने श्री महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात प्रकट किया। ये श्री राघवानन्द के ताऊ के सबसे छोटे पुत्र हैं। आज कल शिव प्रसाद राष्ट्रीय इण्टर कालेज, अछनेरा में प्रवक्ता हैं।

[२] डा० श्याम सुन्दर शर्मा इनके ताऊ के पौत्र हैं। आजकल एम०डी० जैन इन्टर कालेज आगरा में प्राचार्य हैं।

Scanned by CamScanner

खेलते, काम करते हैं और श्री स्वामी जी महाराज इस प्रकार कह रहे हैं।

सन्यास ग्रहण :—

श्री रघुवीर प्रसाद के हृदय में कलकत्ते से ही स्थाई संस्कार बना। आगे चलकर सन् १९७६ में महाकुम्भ के पावन पर्व पर प्रयागराज में श्री महाराज जी ने इन्हें सन्यास की दीक्षा प्रदान की। तभी से ये स्वामी राघवानन्द के नाम से जाने जाते हैं।

भक्ति के संयोग और वियोग दो भेद हैं। साधारण लोगों के लिए संयोग का अनुभव नहीं होता। चैतन्य महाप्रभु वियोग भक्ति को ही अधिक महत्व देते हैं। वियोग भक्ति के भी अयोग और वियोग दो प्रकार हैं। अयोग उस स्थिति का नाम है जब मिलन से पूर्व मिलने के लिए बेचैनी होती है और मिलकर विछुड़ने पर जो दुःख होता है वह वियोग है। ये भक्ति की अलग-अलग श्रेणियाँ हैं, जो पात्रानुसार और अधिकारी के अनुसार प्राप्त होती हैं।

Scanned by CamScanner

पं० मुन्नाराम दन्डौतिया

संसार में कुछ ऐसी विभूतियाँ होती हैं जो केवल परमार्थ के लिए ही अवतरित होती हैं। उनका जीवन गृहस्थी की संकुचित परिधि में न सिमिट कर सम्पूर्ण विश्व में परिप्लावित होकर सम्पूर्ण देश और काल को पवित्र करता है। अतः श्री महाराज जी ऐसी ही महान विभूतियों में से एक थे। अपने शिष्य और भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण किया।

"राम से अधिक राम कर 'दासा' भक्त भगवान से बड़ा होता है।" यह सर्वविदित है। पं० श्री मुन्नाराम शर्मा श्री महाराज जी के ऐसे ही दास तथा भक्तों में से एक हैं। आप श्री महाराज जी के परम प्रिय शिष्य रहे हैं।

आपने एक उच्च और प्रतिष्ठित कुल में जन्म लिया। आपके पिता एक देवता तुल्य और माता श्री देवी स्वरूपा थीं। आपके पिता पं० श्री रोशनलाल शर्मा अवागढ़ रियासत में कारिन्दा के पद पर थे। आप अवागढ़ नरेश के परम प्रिय एवं परम विश्वास पात्र रहे। ऐसे पुण्यात्मा के यहाँ पं० मुन्नाराम दन्डौतिया

Scanned by CamScanner

पं० मुन्नाराम दण्डौतिया

Scanned by CamScanner

२० सितम्बर १९३० को अवागढ़ किला में जन्म लिया। आपने अपने जन्म से उस देश और काल को पवित्र किया। आप अपने माता-पिता की सबसे छोटी संतान हैं। आपके चार बड़े भाई थे और वे सभी श्री महाराज जी के परम भक्त थे। आप मूलरूप से 'बरहन' जिला आगरा के निवासी हैं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जु० १९३६ में बरहन में शुरू हुई थी तथा हाई स्कूल से एम.एस.सी.ए.जी. तक आपने राजा बलवंतसिंह महाविद्यालय, आगरा में शिक्षा प्राप्त की और सन् १९५८ से लेकर आप आर. ई०आई० कालेज दयाल बाग में प्राध्यापक से लेकर प्रधानाचार्य के पद तक रहे और सन् १९९० में आपने अपने पद से अवकाश ग्रहण किया।

श्री महाराज जी का प्रथम दर्शन :—

आपको श्री महाराज जी का प्रथम दर्शन अक्टूबर १९३७ शरद पूर्णिमा के दिन हुआ। उस समय आप कक्षा दो के विद्यार्थी थे। श्री महाराज जी उस दिन बरहन पधारे थे। श्री महाराज जी के दर्शन के लिए बहुत से स्त्री-पुरुष तथा बच्चे एकत्रित थे। उन्हीं सब में आप एकटक, गम्भीर मुद्रा में श्री महाराज का

Scanned by CamScanner

दर्शन कर रहे थे। अतः श्री महाराज जी आपकी ओर आकृष्ट हुए और आपको अपने पास बुलाया, बहुत प्यार किया तथा प्रसाद दिया। आपका परिचय पूँछा। तभी से आपके पावन हृदय में श्री महाराज जी विराजमान हो गये तथा श्री महाराज जी ने आप पर अनन्य प्रेम की वर्षा की। यही कारण है कि श्री महाराज जी कहा करते थे कि, "हमारा और मुन्नाराम का बहुत जन्मों का साथ है।" उस समय यह बात हमारी समझ में कम आती थी, किन्तु आज हमें पूर्ण विश्वास हो गया है कि श्री महाराज जी यह बात उचित ही कहा करते थे। श्री महाराज जी ने अपने जीवन काल में श्री शर्मा जी के प्रति विशेष स्नेहामृत की वर्षा की और ब्रह्मलीन होने के बाद भी श्री महाराज जी आपको एक गुरुतर कार्य प्रदान कर गये जिसे आप अपना तन, मन, धन देकर पूर्ण कर रहे हैं। श्री महाराज जी से जब हम लोग प्रार्थना करते थे कि कहीं आश्रम बना लिया जाय, तो यही कहते थे कि हाँ, बनेगा, भव्य बनेगा। अतः श्री शर्मा जी इस कार्य का सम्पादन श्री महाराज जी के अन्य शिष्यों एवं भक्तों का सहयोग लेकर कर रहे हैं। आज श्री वृन्दावनधाम में जो श्री महाराज जी के विग्रह की स्थापना हुई है। उससे यह प्रगट होता है

Scanned by CamScanner

कि श्री महाराज जी आपके विषय में जो कुछ कहते थे आपने वह चरितार्थ किया है।

श्री मुन्नालाल जी जब भी अपने विद्यालय से समय पाते थे तभी श्री महाराज जी की सेवा में पहुँचते थे। प्रत्येक ग्रीष्मावकाश, दशहरा, दीवाली तथा होली आदि सभी पर्वों पर आप श्री महाराज जी की सेवा में ही रत रहते थे। भारत वर्ष का ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ आप सेवा में न रहे हों। बम्बई, कलकत्ता, पूना दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थानों पर आप अनेक बार सेवा में रहे। आप प्रत्येक श्री गुरु पूर्णिमा तथा जन्म दिवस पर, जहाँ भी श्री महाराज जी होते थे, अवश्य पहुँचते थे।

श्री वृन्दावन धाम :-

वृन्दावन धाम को श्री महाराज जी अपना गुरु दरवार मानते थे। परम् पूज्य श्री उड़िया बाबा को गुरु मानते थे। इनके अतिरिक्त श्री हरि बाबा, श्री श्री माँ आनन्द मई; श्री स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज और बाबा श्री रामदास जी महाराज का विशेष सम्मान करते थे। जब भी श्री महाराज जी वृन्दावन आते थे तो आप उनकी सेवा में अधिक से अधिक समय समर्पित

Scanned by CamScanner

करते थे। आपके हृदय में जैसी भक्ति है अन्यत्र बहुत कम देखने को मिलती है।

श्री महाराज जी ने दो गुरुपूर्णिमा महोत्सव लगातार कभी नहीं मनाये। प्रत्येक वर्ष नया स्थान चुनते थे। लेकिन श्री वृन्दावन धाम में लगातार दो गुरुपूर्णिमा महोत्सव सन् १९८०–१९८१ के मनाये। तदोपरान्त १९८२ की होली के बाद चैत्रबदी दौज को श्री महाराज जी ब्रह्मलीन हो गये। अतः सन् १९८२ श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव श्री स्वामी गोकुलानन्द जी की अध्यक्षता में मनाया गया। तीसरी बार श्री गुरुपूर्णिमा का महोत्सव आपकी अध्यक्षता में सन् १९८३ में मनाया गया। अब हम लोगों के सामने एक प्रश्न पैदा हुआ कि प्रत्येक वर्ष सभी लोग इस उत्सव को कहाँ मनाया करें। अतः आपने ही श्री महाराज जी की प्रेरणा से हम लोगों का पथ प्रदर्शन किया। आपने कहा कि महापुरुष किसी कार्य के लिए संकेत मात्र ही करते हैं। श्री महाराज जी ने अपनी पहली और अन्तिम गुरुपूर्णिमा यहीं मनायी थी। अतः श्री महाराज जी का यही संकेत था कि हम लोग यहीं वृन्दावन में प्रत्येक वर्ष उत्सव मनाया करें। अतः श्री महाराज जी की कृपा से आज तक श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव श्री

Scanned by CamScanner

वृन्दावन धाम में सानन्द मना रहे हैं।

आश्रम, मन्दिर निर्माण एवं श्री महाराज जी के विग्रह की स्थापना :—

प्रभू जिससे जैसा चाहते हैं कराते हैं। यहाँ आश्रम, मन्दिर निर्माण एवं श्री महाराज जी के विग्रह की स्थापना को असम्भव ही समझते थे, परन्तु जो बात कल्पना मात्र थी आज वह साकार हो गई। यद्यपि इस गुरुतर कार्य में आपने श्री महाराज जी के सभी शिष्य एवं भक्तों का सहयोग लेने का भरसक प्रयास किया है परन्तु आप का परिश्रम, त्याग, लगन एवं निष्ठा वर्णनातीत है।

भावना का उदय :—

सन् १९८३ में चौथी गुरुपूर्णिमा आपकी ही अध्यक्षता में मनाई गई, तभी आपने एक प्रस्ताव रखा कि क्यों न हम लोग कुछ जमीन खरीद कर श्री महाराज जी के नाम से एक स्मारक की स्थापना करें और प्रत्येक वर्ष श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव यहीं मनाया करें। अतः इस प्रस्ताव को सभी ने सराहा। एक कमेटी गठित की गई। जमीन खरीदने का भार आपने अपने ऊपर लिया। अतः आप तभी से अपने कार्य में जुट गये। आप

Scanned by CamScanner

वर्तमान स्थान के लिए कई बार दिल्ली गये और अगस्त १९८४ में जमीन की रजिस्ट्री हो गई।

श्री महाराज जी का जन्म शताब्दी समारोह.

श्री महाराज जी का जन्म शताब्दी समारोह श्री वृन्दावन धाम में अगहन सुदी पूर्णिमा सन् १९८९ को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। श्रीमद्भागवत सप्ताह, भण्डारा हुआ। इस सबके प्रेरणा श्रोत आप ही थे। तभी से आपको यह धुन सवार हो गई कि शीघ्रोति शीघ्र श्री महाराज जी का स्मारक बने। अतः यह शुभ अवसर दि० १३ अगस्त १९९२ को आया। संत शिरोमणि श्री बामदेव जी महाराज द्वारा मन्दिर का शिलान्यास हुआ। आपने सम्पूर्ण निर्माण कार्य अपनी देखरेख में कराया। आश्रम का नक्शा आपने स्वयं बनाया; जिसे देखकर आज सभी प्रशंसा करते हैं। जब आपसे कोई प्रश्न करता है कि यह सब कैसे हुआ तब आपका सीधा सा उत्तर रहता है कि श्री महाराज जी ने ही सब कुछ किया है। यही कारण है कि निर्माण कार्य में पहाड़ जैसी कठिनाइयाँ फूल बन गईं।

मन्दिर का विशेष महत्व :—

जिस स्थान पर श्री महाराज जी के विग्रह को

Scanned by CamScanner

स्थापना हुई है, यह वही स्थान है जहाँ श्री महाराज जी कभी तपस्या किया करते थे। यहाँ पहले घोर जंगल था। श्री महाराज जी इसी स्थान पर एक हींस के पेड़ के नीचे बैठकर तप किया करते थे। श्री उड़िया बाबा जिन लोगों को आपके लिये भोजन भेजते थे उन्होंने यह बात बताई है। यह सिद्ध भी हो रहा है जो लोग श्री महाराज जी के मन्दिर में बैठकर महामन्त्र का जप करता है उसकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

श्री मुन्नाराम जी यहीं श्री महाराज जी की सेवा पूजा में रत हैं। आप अपार सुख और शान्ति का अनुभव कर रहे हैं। आपका यही कहना है कि इससे ज्यादा सुख मुझे कहीं मिल नहीं सकता है, क्योंकि संसार में इससे अधिक सुख कहीं है नहीं।

श्री महाराज जी का अन्तिम दर्शन :—

जिनके अन्दर असीम् गुरु-भक्ति होती है, उन्हीं को ऐसा अवसर प्राप्त होता है। सन् १९८२ की होली से एक दिन पूर्व आपके एक मित्र डा० शिवराम शर्मा आपके पास दयाल बाग पहुँचे। आपने उनसे कहा, "भाई मुझे बड़ी बेचैनी हो रही है। श्री महाराज जी मुझे हर समय दीख रहे हैं। मैं श्री महाराज जी के

Scanned by CamScanner

दर्शन को इलाहाबाद जाना चाहता हूँ।" अतः आप दूसरे दिन ही रिजर्वेशन कराकर चैत्र सुदी दौज को इलाहाबाद पहुँचे तो श्री महाराज जी के पार्थिव शरीर के ही दर्शन मिले।

यह सब कुछ आपकी गुरु भक्ति एवं श्रद्धा का ही प्रतीक है।

जिन्दगी भर पथ-पन्थ में रहने का नहीं

जिन्दगी भर पन्थ में रहने का नहीं हैं। कोई भी चलता है तो वह पन्थ में, मार्ग में रहने के लिए नहीं चलता है, अपने गन्तव्य पर पहुँचने के लिए चलता है। तो जहाँ पहुँचना है, वहाँ पहुँचे ही नहीं और मार्ग में ही फँस गये, सराय में ही रह गये या धर्मशाला में ही टिक गये। जिन्दगी भर रहने के लिए कोई पन्थ नहीं होता है; कुपन्थ छुड़ाने के लिए पन्थ होता है। उसका भी निवृत्ति से ही तात्पर्य है।

Scanned by CamScanner